पंचम माला, खंड 23, अंक 1 — सोमवार, 19 फरवरी, 1973/30 माघ, 1894 (शक)
Fifth Series, Vol. XXIII, No. 1 — Monday, February 19, 1973/Magha 30, 1894 (Saka)

लोक-सभा वाद-विवाद

का

संक्षिप्त अनूदित संस्करण

SUMMARISED TRANSLATED VERSION OF LOK SABHA DEBATES

[सातवां सत्र / Seventh Session]

5th Lok Sabha

[खंड 23 में अंक 1 से 10 तक हैं / Vol. XXIII contains Nos. 1 to 10]

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
NEW DELHI

मूल्य: दो रुपये — *Price :* Two Rupees

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें अंग्रेजी/
हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है ।]

[This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi]

विषय सूची/CONTENTS

अंक 1, सोमवार, 19 फरवरी, 1973/30 माघ, 1894 (शक)

No. 1, Monday, February 19, 1973/Magh 30, 1894 (Saka)

विषय	Subject	पृष्ठ/Pages
सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची	Alphabetical List of Members	i–ix
सभा के पदाधिकारी	Officers of the House ..	x
भारत सरकार के मंत्री, राज्य मंत्री आदि	Government of India--Ministers, Ministers of State, etc.	xi–xii
राष्ट्रपति का अभिभाषण—सभा पटल पर रखा गया	President's Address—Laid on the Table	1–19
निधन-सम्बन्धी उल्लेख	Obituary References	19–25
अध्यक्ष महोदय	Mr. Speaker ..	19–21
श्रीमती इन्दिरा गांधी	Shrimati Indira Gandhi	21–22
श्री समर मुखर्जी	Shri Samar Mukherjee	22
श्री सरजू पांडे	Shri Sarjoo Pandey	22–23
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	Shri Atal Bihari Vajpayee	23
श्री जी० विश्वनाथ्न	Shri G. Vishwanathan	23
श्री श्यामनंदन मिश्र	Shri Shyamnandan Mishra	23
श्री पी० के० देव	Shri P. K. Deo	23–24
श्री समर गुह	Shri Samar Guha	24
श्री जांबुवंत धोटे	Shri Jambuwant Dhote ..	24
श्रीमती एम० गौड्फ्रे	Shrimati M. Godfrey	24
श्री मुहम्मद शरीफ	Shri Muhammed Sheriff	24–25
श्री के० हनुमन्तैया	Shri K. Hanumanthaiya	25
श्री बनमाली पटनायक	Shri Banmali Patnaik ..	25

सदस्यों की वर्णानुक्रम सूची

पंचम लोक सभा

अ

अकिनीडु, श्री मगन्ती (गुडिवाडा)
अग्रवाल, श्री वीरेन्द्र (मुरादाबाद)
अग्रवाल, श्री श्रीकृष्ण (महासमुन्द)
अचल सिंह, श्री (आगरा)
अजीज इमाम, श्री (मिर्जापुर)
अंसारी, श्री जियाउर्रहमान (उन्नाव)
अप्पालानायडू, श्री (अनकपल्ली)
अफजलपुरकर, श्री धर्मराव (गुलबर्गा)
अम्बेश, श्री (फिरोजाबाद)
अरविन्द नेताम, श्री (कांकेर)
अलगेशन, श्री ओ०वी० (तिरुत्तनी)
अवधेश चन्द्र सिंह, श्री (फर्रुखाबाद)
अहमद, श्री फखरुद्दीन अली (बारपेटा)
अहिरवार, श्री नाथूराम (टीकमगढ़)

आ

आगा, श्री सैयद अहमद (बारामूला)
आजाद, श्री भागवत झा (भागलपुर)
आनन्द सिंह, श्री (गौंडा)
आस्टिन, डा० हेनरी (एरणाकुलम)

इ

इसहाक, श्री ए० के० एम० (बसिरहाट)

उ

उइके, श्री मंगरू (मण्डला)
उन्नीकृष्णन्, श्री के०पी० (बडागरा)
उरांव, श्री कार्तिक (लोहारडगा)
उरांव, श्री टुना (जलपाईगुड़ी)
उलगनम्बी, श्री आर०पी० (बैल्लौर)

ए

एन्थनी, श्री फ्रैंक (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)
एंगती, श्री बीरेन (दीफू)

क

ककोटी, श्री रोबिन (डिब्रूगढ़)
कछवाय, श्री हुकम चन्द (मुरेना)
कटकी, श्री लीलाधर (नवगांव)
कडनापल्ली, श्री रामचन्द्रन् (कासरगोड)
कतामुतु, श्री एम० (नागापट्टिनम्)
कंदम, श्री जे०जी० (वर्धा)
कंदम, श्री दत्ताजीराव (हतकंगले)
कपूर, श्री सतपाल (पटियाला)
कमला कुमारी, कुमारी (पालामऊ)
कमला प्रसाद, श्री (तेजपुर)
कर्णसिंह, डा० (ऊधमपुर)
कर्णी सिंह, डा० (बीकानेर)
कल्याणसुन्दरम्, श्री एम० (तिरुचिरापल्ली)
कलिंगारायर, श्री मोहनराज (पोलाची)
कस्तूरे, श्री ए०एस० (खामगांव)
कादर, श्री एस० ए० (बम्बई मध्य दक्षिण)
कांबले, श्री एन०एस० (पंढरपुर)
कांबले, श्री टी०डी० (लातूर)
काकोडकर, श्री पुरुषोत्तम (पंजिम)
कामराज, श्री के० (नागरकोइल)
कामाक्षैया, श्री डी० (नेल्लोर)
काले, श्री (जालना)
कावड़े, श्री वी०आर० (नासिक)
काहनडोल, श्री जैड० एम० (मालेगांव)
किन्दर लाल, श्री (हरदोई)
किरुतिनन, श्री था (शिवगंज)
किस्कु, श्री ए० के० (झाड़ग्राम)
कुमारमंगलम्, श्री एस० मोहन (पांडीचेरी)
कुरील, श्री बैजनाथ (रामसनेहीघाट)
कुरेशी, श्री मुहम्मद शफी (अनन्तनाग)
कुलकर्णी श्री राजा (बम्बई उत्तर पूर्व)
कुशोक बाकुला, श्री (लद्दाख)
केदार नाथ सिंह, श्री (सुल्तानपुर)
कैलास, डा० (बम्बई दक्षिण)
केवीचुसा, श्री ए० (नागालैण्ड)
कोत्राशट्टी, श्री ए०के० (बेलगांव)
कौपा, श्री सी० एच० मोहम्मद (मंजेरी)
कौल, श्रीमती शीला (लखनऊ)

कृष्णन् श्री ई० आर० (सलेम)
कृष्णन् श्री एम० के० (पोन्नाणि)
कृष्णन्, श्री जी० वाई० (कोलार)
कृष्णप्पा, श्री एम० वी० (हस्कोटे)
कृष्णा कुमारी, जोधपुर, श्रीमती (जोधपुर)

ख

खाडिलकर, श्री आर० के० (बारामती)

ग

गंगादेव श्री पी० (अंगुल)
गंगादेवी, श्रीमती (मोहनलालगंज)
गणेश, श्री के०आर० (अन्दमान तथा निकोबार द्वीप समूह)
गरचा, श्री देवेन्द्र सिंह (लुधियाना)
गावीत, श्री टी०एच० (नानदरबार)
गांधी, श्रीमती इन्दिरा (रायबरेली)
गायकवाड़, श्री फतहसिंहराव (बड़ौदा)
गायत्री देवी जयपुर, श्रीमती (जयपुर)
गिरि, श्री एस० बी० (वारंगल)
गिरि, श्री बी० शंकर (दमोह)
गिल, श्री महेन्द्र सिंह (फिरोजपुर)
गुप्त, श्री इन्द्रजीत (अलीपुर)
गुह, श्री समर (कन्टाई)
गेंदा सिंह, श्री (पदरौना)
गोखले, श्री एच० आर० (बम्बई उत्तर पश्चिम)
गोटखिंडे, श्री अण्णासाहिब (सांगली)
गोगोई, श्री तरुण (जोरहाट)
गोदरा, श्री मनीराम (हिसार)
गोपाल, श्री के० (करुर)
गोपालन, श्री ए० के० (पालघाट)
गोमांगो, श्री गिरीधर (कोरापुट)
गोविन्द दास, डा० (जबलपुर)
गोयेन्का, श्री आर० एन० (विदिशा)
गोस्वामी, श्री दिनेश चन्द्र (गोहाटी)
गोस्वामी, श्रीमती विभा घोष (नवद्वीप)
गोहन, श्री सी०सी० (नाम निर्देशित आसाम का उत्तर पूर्व सीमान्त क्षेत्र)
गोडफ्रे, श्रीमती एम० (नामनिर्देशित आंग्ल भारतीय)
गौडर, श्री जे० माता (नीलगिरी)
गौडा, श्री पम्पन (रायचूर)
गौतम, श्री सी०डी० (बालाघाट)

घ

घोष, श्री पी०के० (रांची)

च

चन्दा, श्रीमती ज्योत्सना (कचार)
चकलेश्वर सिंह, श्री (मथुरा)
चटर्जी, श्री सोमनाथ (बर्दवान)
चतुर्वेदी, श्री रोहन लाल (एटा)
चन्द्र गौडा, श्री डी० बी० (चिकमगलूर)
चन्द्रप्पन, श्री सी०के० (तेल्लीचेरी)
चन्द्र शेखर सिंह, श्री (जहानाबाद)
चन्द्र शेखरप्पा बीरबासप्पा, श्री टी० वी० (शिमोगा)
चन्द्राकर, श्री चन्दूलाल (दुर्ग)
चन्द्रिका प्रसाद, श्री (बलिया)
चव्हाण, श्री डी० आर० (कराड़)
चव्हाण, श्री यशवंतराय (सतारा)
चावड़ा, श्री के० एस० (पाटन)
चावला, श्री अमरनाथ (दिल्ली सदर)
चिक्कलिंगया, श्री के० (मांड्या)
चित्तिबाबू, श्री सी० (चिंगलपट)
चिन्नाराजी, श्री सी०के० (तिरूपत्तूर)
चेलाचामी, श्री ए० एम० (टेंकासी)
चौधरी, श्री अमर सिंह (मांडवी)
चौधरी, श्री ईश्वर (गया)
चौधरी, श्री त्रिदिब (बरहामपुर)
चौधरी, श्री नीतिराज सिंह (हौशंगाबाद)
चौधरी, श्री बी० ई० (बीजापुर)
चौधरी, श्री मोइनुल हक (धुबरी)
चौहान, श्री भारत सिंह (धार)

छ

छुट्टन लाल, श्री (सवाई माधोपुर)
छोटे लाल, श्री (चैल)

ज

जगजीवन राम, श्री (सासाराम)
जदेजा, श्री डी०पी० (जामनगर)
जनार्दनन, श्री सी० (त्रिचूर)
जमीलुर्रमान, श्री मुहम्मद (किशनगंज)
जयलक्ष्मी, श्रीमती वी० (शिवकाशी)
जाफर शरीफ, श्री सी० के० (कनकपुरा)
जार्ज, श्री ए० सी० (मुकुन्दपुरम)
जार्ज, श्री वरके (कोट्टायम)
जितेन्द्र प्रसाद, श्री (शाहजहानपुर)
जुल्फिकार अली खां, श्री (रामपुर)
जोजफ, श्री एम० एम० (पीरमाड़े)

जोरदर, श्री दिनेश (माल्दा)
जोशी, श्री जगन्नाथ राव (शाजापुर)
जोशी, श्री पोपटलाल एम० (बनसकंठा)
जोशी, श्रीमती सुभद्रा (चांदनी चौक)

झ

झा, श्री चिरंजीव (सहरसा)
झा, श्री भोगेन्द्र (जायनगर)
झारखन्डे राय, श्री (घोसी)
झंझुनवाला, श्री विश्वनाथ (चितौड़गढ़)

ट

टोम्बी सिंह, श्री एन० (आन्तरिक मनीपुर)

ठ

ठाकुर, श्री कृष्णराव (चिमूर)
ठाकरे, श्री एस० बी० (यवतमाल)

ड

डागा, श्री मूलचन्द (पाली)
डोडा, श्री हीरा लाल (बांसवाड़ा)

ढ

ढिल्लों, डा० जी० एस० (तरनतारन)

त

तरोडकर, श्री वी० बी० (नांदेड़)
तुलसीराम, श्री वी० (पेद्दापल्लि)
तुलाराम, श्री (घाटमपुर)
तिवारी, श्री के० एन० (बेतिया)
तिवारी, श्री डी० एन० (गोपालगंज)
तिवारी, श्री रामगोपाल (बिलासपुर)
तिवारी, श्री शंकर (इटावा)
तिवारी, श्री चन्द्रभाल मनी (बलरामपुर)
तेवर, श्री पी० के० एम० (रामनाथपुरम)
तैयब हुसैन, श्री (गुड़गांव)

द

दंडपाणी, श्री सी०टी० (धारापुरम)
दत्त, श्री बीरेन (त्रिपुरा पश्चिम)
दंडवते, प्रो० मधु (राजापुर)
दरबारा सिंह, श्री (होशियारपुर)
दलबीर सिंह, श्री (सिरसा)
दलीप सिंह, श्री (बाह्य दिल्ली)
दामाणी, श्री एस० आर० (शोलापुर)
दास, श्री अनादि चरण (जाजपुर)
दास, श्री धरनीधर (मंगलदायी)
दास, श्री रेणुपद (कृषनगर)
दासचौधरी, श्री बी०के० (कूच बिहार)
दासप्पा, श्री तुलसीदास (मैसूर)
दिनेश सिंह, श्री (प्रतापगढ़)
दीक्षित, श्री गंगाचरण (खंडवा)
दीक्षित, श्री जगदीश चन्द्र (सीतापुर)
दीवीकन, श्री (कल्लाकुरीची)
दुमादा, श्री एल० के० (दहानू)
दुबे, श्री ज्वाला प्रसाद (भंडारा)
दुरईरासु, श्री ए० (पैरम्बलूर)
देव, श्री शंकर नारायण सिंह (बांकुरा)
देव, श्री दशरथ (त्रिपुरा पूर्व)
देव, श्री पी० के० (कालाहांडी)
देव, श्री राज राज सिंह (बोलनगीर)
देशमुख, श्री के० जी० (अमरावती)
देशमुख, श्री शिवाजी राव एस० (परभणि)
देसाई, श्री डी० डी० (कैरा)
देसाई, श्री मोरार जी (सूरत)
द्विवेदी, श्री नागेश्वर (मछलीशहर)

ध

धर्मगज सिंह, श्री (शाहबाद)
धामनकर, श्री (भिवंडी)
धारिया, श्री मोहन (पूना)
धूसिया, श्री अनंत प्रसाद (बस्ती)
धोटे, श्री जांबुवंत (नागपुर)

न

नन्दा, श्री गुलजारी लाल (कैथल)
नरेन्द्र सिंह, श्री (सतना)
नायक, श्री बक्शी (फुलबनी)
नायक, श्री बी० वी० (कनारा)

नायर, श्री एन० श्रीकान्तन् (क्विलोन)
नायर, श्रीमती शकुन्तला (केसरगंज)
नाहाटा, श्री अमृत (बाड़मेर)
निंबालकर, श्री (कोल्हापुर)
नेगी, श्री प्रताप सिंह (गढ़वाल)

प

पंडा, श्री डी० के० (भंजनगर)
पंडित, श्री एस० टी० (भीर)
पटनायक, श्री जे० बी० (कटक)
पटनायक, श्री बनमाली (पुरी)
पटेल, श्री अरविन्द एम० (राजकोट)
पटेल, श्री एच० एम० (ढंढुका)
पटेल, श्री नटवर लाल (मेहसाना)
पटेल, श्री नानूभाई एन० (बलसार)
पटेल, श्री प्रभुदास (डभोई)
पटेल, श्री रामूभाई (दादरा तथा नगर हवेली)
पन्त, श्री कृष्ण चन्द्र (नैनीताल)
परमार, श्री भालजीभाई (दोहद)
पलोडकर, श्री मानिकराव (औरंगाबाद)
पस्वान, श्री राम भगत (रोसेरा)
पहाड़िया, श्री जगन्नाथ (हिंडौन)
पांडे, श्री कृष्ण चन्द्र (खलीलाबाद)
पांडे, श्री तारकेश्वर (सलेमपुर)
पांडे, श्री दामोदर (हजारीबाग)
पांडे, श्री नरसिंह नारायण (गोरखपुर)
पांडे, श्री राम सहाय (राजनंद गांव)
पांडेय, डा० लक्ष्मीनारायण (मन्दसौर)
पांडे, श्री सरजू (गाजीपुर)
पांडे, श्री सुधाकर (चन्दौली)
पाओकाई हाओकिप, श्री (बाहय मनीपुर)
पाटिल, श्री अनन्तराव (खेड़)
पाटिल, श्री ई० वी० विखे (कोपरगांव)
पाटिल, श्री एस० बी० (बागलकोट)
पाटिल, श्री कृष्णराव (जलगांव)
पाटिल, श्री टी० ए० (उस्मानाबाद)
पाटिल, श्री सी० ए० (धूलिया)
पाणिग्रही, श्री चिन्तामणि (भुवनेश्वर)
पाराशर, प्रो० नारायण चन्द (हमीरपुर)
पारिख, श्री रसिकलाल (सुरेन्द्रनगर)
पार्थासारथी, श्री पी० (राजमपेट)
पिल्ले, श्री आर० बालकृष्णन (मावेलिकरा)
पुरती, श्री एम० एस० (सिंहभूम)
पेजे, श्री एस० एल० (रत्नगिरि)
पैन्यूली, श्री परिपूर्णानन्द (टिहरी गढ़वाल)
प्रताप सिंह, श्री (शिमला)
प्रधान, श्री धनशाह (शहडोल)
प्रधानी, श्री के० (नौरंगपुर)
प्रबोध चन्द्र, श्री (गुरदासपुर)

ब

बनमाली, बाबू, श्री (सम्बलपुर)
बनर्जी, श्री एस० एम० (कानपुर)
बनर्जी, श्रीमती मुकुल (नई दिल्ली)
बनेरा, श्री हमेन्द्र सिंह (भीलवाड़ा)
बड़े, श्री आर० पी० (खारगोन)
बरूआ, श्री वेदव्रत (कालियाबोर)
बर्मन, श्री आर० एन० (बलूरघाट)
बसु, श्री ज्योतिर्मय (डायमंड हार्बर)
बसुमतारी, श्री डी० (कोकराझार)
बहुगुणा, श्री हेमवतीनन्दन (इलाहाबाद)
बाजपेयी, श्री विद्याधर (अमेठी)
बादल, श्री गुरदास सिंह (फाजिल्का)
बाबूनाथ सिंह, श्री (सरगुजा)
बारुपाल, श्री पन्नालाल (गंगानगर)
बालकृष्णन, श्री के० (अम्बलपुजा)
बालकृष्णैया, श्री टी० (तिरूपति)
बालदन्डायुतम, श्री (कोयम्बटूर)
बासप्पा, श्री के० (चित्रदुर्ग)
बिष्ट, श्री नरेन्द्र सिंह (अलमोड़ा)
बीरेन्द्र सिंह राव, श्री (महेन्द्रगढ़)
बूटा सिंह, श्री (रोपड़)
बेरवा, श्री ओंकारलाल (कोटा)
बेसरा, श्री सत्य चरण (दुमका)
ब्रजराज सिंह, कोटा श्री (झालावाड़)
ब्रह्मानन्द जी, श्री स्वामी (हमीरपुर)
ब्राह्मण, श्री रतन लाल (दार्जिलिंग)

भ

भगत, श्री एच० के० एल० (पूर्व दिल्ली)
भगत, श्री बी० आर० (शाहबाद)
भट्टाचार्य, श्री एस० पी० (उलुबेरिया)
भट्टाचार्य, श्री जगदीश (घाटल)
भट्टाचार्य, श्री दीनेन (सीरमपुर)
भट्टाचार्य, श्री चतलेन्दु (गिरिडीह)
भागीरथ भंवर, श्री (झाबुआ)

भार्गव, श्री बशेश्वर नाथ (अजमेर)
भार्गवी, तनकप्पन, श्रीमती (अडूर)
भाटिया, श्री रघुनन्दन लाल (अमृतसर)
भीष्मदेव, श्री एम० (नगरकुरनूल)
भुवाराहन, श्री जी० (मैटूर)
भौरा, श्री मान सिंह (भटिंडा)

म

मलिक, श्री मुख्तियार सिंह (रोहतक)
मंडल, श्री जगदीश नारायण (गौड्डा)
मंडल, श्री यमुना प्रसाद (समस्तीपुर)
मल्लिकार्जुन, श्री (मेडक)
मधुकर, श्री कमल मिश्र (केसरिया)
मनोहरन्, श्री के० (मद्रास उत्तर)
मल्होत्रा, श्री इन्द्रजीत (जम्मू)
महन्ती, श्री सुरेन्द्र (केन्द्रपाड़ा)
महाजन, श्री वाई० एस० (बुलडाना)
महाजन, श्री विक्रम (कांगड़ा)
महाता, श्री देवेन्द्र नाथ (पुरूलिया)
महापात्र, श्री श्याम सुन्दर (बालासोर)
महाराज सिंह, श्री (मैनपुरी)
महिषी, डा० सरोजिनी (धारवाड़ उत्तर)
मांझी, श्री भोला (जमुई)
मांझी, श्री कुमार (क्योंझर)
मांझी, श्री गजाधर (सुन्दरगढ़)
मारक, श्री के० (तुर)
मारन, श्री मुरासोली (मद्रास दक्षिण)
मार्तण्ड, सिंहरीवा, श्री (रीवा)
मालन्ना, श्री के० (मधुगिरि)
मालवीय, श्री के० डी० (डुमरियागंज)
मायावन, श्री वी० (चिदाम्बरम)
मावलंकर, श्री पी० जी० (अहमदाबाद)
मिर्धा, श्री नाथूराम (नागौर)
मिश्र, श्री एल० एन० (दरभंगा)
मिश्र, श्री जी० एस० (छिंदवाड़ा)
मिश्र, श्री जगन्नाथ (मधुवनी)
मिश्र, श्री विभूति (मोतीहारी)
मिश्र, श्री श्यामनन्दन (बेगुसराय)
मिश्र, श्री एस० एन० (कन्नौज)
मुकर्जी, श्री एच० एन० (कलकत्ता उत्तर पूर्व)
मुखर्जी, श्री सरोज (कटवा)
मुखर्जी, श्री समर (हावड़ा)
मूर्ति, श्री बी० एम० (अमालापुरम)
मुत्तुस्वामी, श्री एम० (तिरुचेंगोड़)
मुन्शी, श्री प्रिय रंजन दास (कलकत्ता दक्षिण)
मुरुगनन्तम, श्री एम० ए० (तिरुनेलवेली)
मेनन, श्री वी० के० कृष्ण (त्रिवेन्द्रम)
मेलकोटे, डा० जी०एस० (हैदराबाद)
मेहता, डा० जीवराज (अमरेली)
मेहता, श्री पी० एम० (भावनगर)
मेहता, डा० महिपतराय (कच्छ)
मोदक, श्री विजय (हुगली)
मोदी, श्री पीलू (गोधरा)
मोदी, श्री श्रीकिशन (सीकर)
मोहन स्वरूप, श्री (पीलीभीत)
मोहम्मद इस्माइल, श्री एम० (बेरकपुर)
मोहम्मद खुदा बख्श, श्री (मुर्शिदाबाद)
मोहम्मद ताहिर, श्री (पूर्णिया)
मोहम्मद यूसुफ, श्री (सिवान)
मोहम्मद शरीफ, श्री (पेरियाकुलम)
मोहसिन, श्री एफ० एच० (धारवाड़ दक्षिण)
मौर्य, श्री बी० पी० (हापुड़)

य

यादव, श्री करन सिंह (बदायूं)
यादव, श्री चन्द्र जीत (आजमगढ़)
यादव, श्री डी०पी० (मुंगेर)
यादव, श्री ज्ञानवेश्वर प्रसाद (कटिहार)
यादव, श्री नागेंद्र प्रसाद (सीतामढ़ी)
यादव, श्री राजेन्द्र प्रसाद (मधेपुरा)
यादव, श्री शिवशंकर प्रसाद (खगरिया)

र

रघुरामैया, श्री के० (गुन्टूर)
रणबहादुर सिंह, श्री (सिंधी)
रवि, श्री वयालार (चिरयिंकील)
राउत, श्री भोला (बगहा)
राज बहादूर, श्री (भरतपुर)
राज देव सिंह, श्री (जौनपुर)
राजू, श्री एम० टी० (नरसापुर)
राजू, श्री पी०बी०जी० (विशाखापत्तनम)
राठिया, श्री उमेद सिंह (रायगढ़)
राणा, श्री एम० बी० (भड़ौच)
राधाकृष्णन्, श्री एस० (कुड्डलूर)
रामकंवर, श्री (टोंक)
रामजी राम, श्री (अकबरपुर)
रामदेव सिंह, श्री (महराजगंज)

राम धन, श्री (लालगंज)
राम प्रकाश, श्री (अम्बाला)
रामशेखर प्रसाद सिंह, श्री (छपरा)
राम सूरत प्रसाद, श्री (बांसगांव)
रामसेवक, चौधरी (जालौन)
राम स्वरूप, श्री (राबर्टसगंज)
राम, श्री तुलमोहन (अरारिया)
राय, श्री विश्वनाथ (देवरिया)
राय, डा० सरदीश (बोलपुर)
राय, श्रीमती माया (रायगंज)
राय, श्रीमती सहोदराबाई (सागर)
राव, श्रीमती बी० राधाबाई ए० (भद्राचलम)
राव, श्री नागेश्वर (मचिलीपट्टणम)
राव, श्री एम० सत्यनारायण (करीमनगर)
राव, डा० के० एल० (विजयवाड़ा)
राव, श्री के० नारायण (बोबिली)
राव, श्री जगन्नाथ (छत्रपुर)
राव, श्री पट्टाभिराम (राजामुन्द्री)
राव, श्री पी० अंकिनीडु प्रसाद (ओंगोल)
राव, श्री जे० रामेश्वर (महबूबनगर)
राव, श्री राजगोपाल (श्री काकुलम)
राव, श्री डा० वी० के० आर० वर्दराज (बेल्लारी)
राव, श्री एम० एस० संजीवी (काकीनाडा)
रिछारिया, डा० गोविन्ददास (झांसी)
रुद्र प्रताप सिंह, श्री (बाराबंकी)
रेड्डी, श्री वाई० ईश्वर (कड़प्पा)
रेड्डी, श्री एम० रामगोपाल (निजामाबाद)
रेड्डी, श्री के० रामकृष्ण (नलगोंडा)
रेड्डी, श्री के० कोडंडा रानी (कुरनूल)
रेड्डी, श्री पी० गंगा (आदिलाबाद)
रेड्डी, श्री पी० एंथनी (अनन्तपुर)
रेड्डी, श्री पी० नरसिन्हा (चित्तूर)
रेड्डी, श्री पी० बायपा (हिन्दपुर)
रेड्डी, श्री पी० बी० (कावली)
रेड्डी, श्री बी० एन० (निरायलगूड़ा)
रोहतगी, श्रीमती सुशीला (बिल्हौर)

ल

लकप्पा, श्री के० (तुमकुर)
लक्ष्मीकान्तम्मा, श्रीमती टी० (खम्मम)
लक्ष्मीनारायणन्, श्री एम० आर० (तिंडिवनम)
लक्ष्मणन् श्री टी० एस० (श्रीपरेम्बदूर)
लम्बोदर, बलियार, श्री (बस्तर)
लालजी भाई, श्री (उदयपुर)
लास्कर, श्री निहार (करीमगंज)
लुतफल हक, श्री (जंगीपुर)

व

वर्मा, श्री रामसिंह भाई (इंदौर)
वर्मा, श्री सुखदेव प्रसाद (नवादा)
वर्मा, श्री फूलचन्द (उज्जैन)
वर्मा, श्री बालगोविन्द (खेरी)
वाजपेयी, श्री अटलबिहारी (ग्वालियर)
विकल, श्री रामचन्द्र (बागपत)
विजयपाल सिंह, श्री (मुजफ्फरनगर)
विद्यालंकार, श्री अमरनाथ (चण्डीगढ़)
विश्वनाथन, श्री जी० (वान्डीवाश)
वीरभद्र सिंह, श्री (मंडी)
वीरय्या, श्री के० (पुट्टूकोटै)
वेंकटस्वामी, श्री जी० (सिद्दिपेट)
वेंकटासुब्बया, श्री पी० (नन्दयाल)
वेकारिया, श्री (जूनागढ़)

श

शंकर देव, श्री (बीदर)
शंकरानन्द, श्री बी० (चिकोडी)
शंकर दयाल सिंह, (चतरा)
शफकत जंग, श्री (कैराना)
शफी, श्री ए० (चांदा)
शम्भूनाथ, श्री (सैदपुर)
शमीम, श्री एस० ए० (श्रीनगर)
शर्मा, श्री ए० पी० (बक्सर)
शर्मा, श्री नवलकिशोर (दौसा)
शर्मा, श्री माधोराम (करनाल)
शर्मा, श्री राम नारायण (धनबाद)
शर्मा, श्री राम रत्न (बांदा)
शर्मा, डा० शंकर दयाल (भोपाल)
शर्मा, डा० हरि प्रसाद (अलवर)
शशि भूषण, श्री (दक्षिण दिल्ली)
शाक्य, श्री महादीपक सिंह (कासगंज)
शास्त्री, श्री राजाराम (वाराणसी)
शास्त्री, श्री रामावतार (पटना)
शास्त्री, श्री विश्वनारायण (लखीमपुर)
शास्त्री, श्री शिवकुमार (अलीगढ़)
शास्त्री, श्री शिवपूजन (विक्रमगंज)
शाहनवाज खां, श्री (मेरठ)
शिन्दे, श्री अण्णासाहिब पी० (अहमदनगर)

शिनाय, श्री पी० आर० (उदीपी)
शिवनाथ सिंह, श्री (झुंझनू)
शिवप्पा, श्री एन० (हसन)
शुक्ल, श्री बी० आर० (बेहराइच)
शुक्ल, श्री विद्याचरण (रायपुर)
शेट्टी, श्री के० के० (मंगलौर)
शेर सिंह, प्रो० (झज्जर)
शैलानी, श्री चन्द्र (हाथरस)
शिवस्वामी, श्री एम० एस० (तिरुचेंडूर)

स

संकटा प्रसाद, डा० (मिसरिख)
संतबख्श सिंह, श्री (फतेहपुर)
सईद, श्री पी० एम० (लक्कादीव मिनिकाय तथा अमीनदीवी द्वीपसमूह)
सक्सेना, प्रो० एस० एल० (महाराजगंज)
सतीश चन्द्र, श्री (बरेली)
सत्पथी, श्री देवेन्द्र (ढेंकानाल)
सत्यनारायण, श्री बी० (पार्वतीपुरम)
सम्भली, श्री इसहाक (अमरोहा)
सरकार, श्री शक्ति कुमार (जयनगर)
सांगलिभाना, श्री (मिजोरम)
सांधी, श्री नरेन्द्र कुमार (जालौर)
साठे, श्री वसन्त (अकोला)
साधूराम, श्री (फिलौर)
सामन्त, श्री एस० सी० (तामलुक)
सामिनाथन्, श्री पी० ए० (गोबीचेट्टिपलयम)
साल्वे, श्री नरेन्द्र कुमार (बेतूल)
सावन्त, श्री शंकरराव (कोलाबा)
सावित्री श्याम, श्रीमती (आवला)
साहा, श्री अजीत कुमार (विष्णुपुर)
साहा, श्री गदाधर (बीरभूम)
सिन्हा, श्री सी० एम० (मयूरभंज)
सिन्हा, श्री धर्मवीर (बाढ़)
सिन्हा, श्री नवल किशोर (मुजफ्फरपुर)
सिन्हा, श्री आर० के० (फैजाबाद)
सिन्हा, श्री सत्येन्द्र नारायण (औरंगाबाद)
सिंह, श्री डी० एन० (हाजीपुर)
सिंह, श्री विश्वनाथ प्रताप (फूलपर)
सिद्धय्या, श्री एस० एम० (चामराजनगर)
सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री (नालन्दा)
सिंधिया, श्री माधवराव (गुना)
सिंधिया-ग्वालियर, श्रीमती वी० आर० (भिंड)
सुदर्शनम्, श्री एम० (नरसारावपेट)
सुन्दर लाल, श्री (सहारनपुर)
सुब्रह्मण्यम, श्री सी० (कृष्णगिरि)
सुब्रावेलु, श्री (मयूरम)
सुरेन्द्र पाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
सूर्यनारायण, श्री के० (एलूरु)
सेकैरा, श्री इराज्मुद (मारमागोआ)
सेझियान, श्री (कुम्बकोणम)
सेट, श्री इब्राहीम सुलेमान (कोजीकोड)
सेठी, श्री अर्जुन (भद्रक)
सेन, श्री ए० के० (कलकत्ता उत्तर पश्चिम)
सेन, डा० रानेन (बारसाट)
सेन, श्री रोबिन (आसनसोल)
सैनी, श्री मुल्कीराज (देहरादून)
सोखी, श्री स्वर्ण सिंह (जमशेदपुर)
सोमसुन्दरम्, श्री एस० डी० (थंजावूर)
सोलंकी, श्री सोमचन्द (गांधीनगर)
सोलंकी, श्री प्रवीण सिंह (आनन्द)
सोहनलाल, श्री टी० (करोलबाग)
स्टीफन, श्री सी० एम० (मुवत्तुपुजा)
स्वर्ण सिंह, श्री (जालंधर)
स्वतंत्र, श्री तेजासिंह (संगरूर)
स्वामीनाथन्, श्री आर० वी० (मदुरै)
स्वामी, श्री सिद्धरामेश्वर (कोप्पल)
स्वैल, श्री जी०जी० (स्वायत्तशासी जिले)

ह

हंसदा, श्री सुबोध (मिदनापुर)
हनुमन्तैया, श्री के० (बंगलौर)
हरिकिशोर सिंह, श्री (पुपरी)
हरी सिंह, श्री (खुर्जा)
हाजरा, श्री मनोरंजन (आरामबाग)
हालदार, श्री माधुर्य्य (मथुरापुर)
हाल्दर, श्री कृष्णचन्द्र (औसग्राम)
हाशिम, श्री एम० एम० (सिकन्दराबाद)
होरो, श्री एन० ई० (खुन्टी)

लोक सभा

अध्यक्ष

डा० जी० एस० ढिल्लों

उपाध्यक्ष

श्री जी० जी० स्वैल

सभापति तालिका

श्री के० एन० तिवारी

श्री नरेन्द्र कुमार साल्वे

श्रीमती शीला कौर

डा० सरदीश राय

श्री इरा सेझियान

सचिव

श्री श्यामलाल शकधर

भारत सरकार

मन्त्री मण्डल के सदस्य

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिक्स मंत्री, सूचना और प्रसारण मंत्री तथा अन्तरिक्ष मंत्री	..	श्रीमती इन्दिरा गांधी
कृषि मंत्री	..	श्री फखरुद्दीन अली अहमद
वित्त मंत्री	..	श्री यशवन्तराव चव्हाण
रक्षा मंत्री	..	श्री जगजीवन राम
विदेश मंत्री	..	श्री स्वर्ण सिंह
पैट्रोलियम और रसायन मंत्री	..	श्री देवकान्त बरुआ
योजना मंत्री	..	श्री डी० पी० धर
गृह मंत्री	..	श्री उमाशंकर दीक्षित
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री	..	श्री एच० आर० गोखले
इस्पात और खान मंत्री	..	श्री एस० मोहन कुमारमंगलम
रेल मंत्री	..	श्री एल० एन० मिश्र
भारी उद्योग मंत्री	..	श्री टी० ए० पाई
संसदीय कार्य मंत्री	..	श्री के० रघुरामैया
नौवहन और परिवहन मंत्री	..	श्री राज बहादुर
निर्माण और आवास मंत्री	..	श्री भोला पस्वानशास्त्री
पर्यटन और नागर विमानन मंत्री	..	डा० कर्ण सिंह
औद्योगिक विकास तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री	..	श्री सी० सुब्रह्मण्यम

राज्य मन्त्री

संचार मंत्री	..	श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा
वाणिज्य मंत्री	..	प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री नीतिराज सिंह चौधरी
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री डी० आर० चव्हाण
योजना मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री मोहन धारिया
वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री के० आर० गणेश
सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री आई० के० गुजराल
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री	..	श्री आर० के० खाडिलकर
पूर्ति मंत्री	..	श्री शाहनवाज खां
पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	डा० सरोजिनी महिषी
संसदीय कार्य विभाग तथा निर्माण और आवास मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री ओम मेहता
गृह मंत्रालय तथा कार्मिक विभाग में राज्य मंत्री	..	श्री राम निवास मिर्धा
शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्री	..	प्रो० एस० नुरूल हसन
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री कृष्ण चन्द्र पन्त
नौवहन और परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री एम० बी० राना
सिंचाई और विद्युत मंत्री	..	डा० के० एल० राव
श्रम और पुनर्वास मंत्री	..	श्री रघुनाथ रेड्डी

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री अण्णासाहिब पी० शिन्दे
रक्षा मंत्रालय (रक्षा उत्पादन) में राज्य मंत्री		श्री विद्याचरण शुक्ल
कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	प्रो० शेर सिंह
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री	..	श्री सुरेन्द्र पाल सिंह

उप मन्त्री

औद्योगिक विकास मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री जियाउर्रहमान अंसारी
विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री वेदव्रत बरूआ
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री कोंडाजी बासप्पा
वाणिज्य मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री ए० सी० जार्ज
इस्पात और खान मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री सुबोध हंसदा
स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री ए० के० किस्कु
गृह मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री एफ० एच० मोहसिन
औद्योगिक विकास मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री प्रणव कुमार मुखर्जी
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उप-मंत्री	..	श्री अरविन्द नेताम
संचार मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री जगन्नाथ पहाड़िया
रक्षा मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री जे० बी० पटनायक
इस्पात और खान मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री सुखदेव प्रसाद
भारी उद्योग मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री सिद्धेश्वर प्रसाद
रेल मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री मुहम्मद शफी कुरेशी
वित्त मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्रीमती सुशीला रोहतगी
संसदीय कार्य विभाग में उप-मंत्री	..	श्री बी० शंकरानन्द
पैट्रोलियम और रसायन मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री दलबीरसिंह
सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री धर्मवीर सिंह
संसदीय कार्य विभाग में उपमंत्री	..	श्री केदार नाथ सिंह
श्रम और पुनर्वास मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री जी० वेंकटस्वामी
सिंचाई और विद्युत मंत्रालय में उप-मंत्री	..	श्री बालगोविन्द वर्मा
शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय तथा संस्कृति विभाग में उप-मंत्री	..	श्री डी० पी० यादव

लोक-सभा
LOK SABHA

सोमवार, 19 फरवरी, 1973/30 माघ, 1894 (शक)
Monday, February 19, 1973/Magha 30, 1894 (Saka)

लोक-सभा 12 बजकर 30 मिनट पर समवेत हुई
The Lok Sabha met at Thirty Minutes Past Twelve of the Clock

[**अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए**
Mr. Speaker *in the chair*]

राष्ट्रपति का अभिभाषण
PRESIDENT'S ADDRESS

सचिव : मैं 19 फरवरी, 1973 को एक साथ समवेत संसद की दोनों सभाओं के समक्ष राष्ट्रपति के अभिभाषण की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं ।

अभिभाषण

माननीय संसद सदस्यगण !

आप उन कठिन कार्यों के लिए एकत्र हुए हैं जो आप के सामने आगे आयेंगे । औपचारिक विधायी कार्य के अतिरिक्त आपको उन समस्याओं पर, जिनका राष्ट्र सामना कर रहा है, विचार कर सरकार और जनता का मार्गदशन करना है ।

जैसे ही देश 1971 की असाधारण चुनौतियों का सामना करने में सफल हुआ कि हमारे सामन नई समस्याऐं उठ खड़ी हुईं । शरणार्थियों की बाढ़ और युद्ध से उत्पन्न कठिनाइयां देश के कई भागों में सूखा पड़ने

से और बढ़ गई । सूखे और कुछ अन्य क्षेत्रों में तूफान और बाढ़ से जिन लोगों को कष्ट हुआ है उनके प्रति हमारी सहानुभूति है । इन सभी क्षेत्रों में रोजगार और सहायता के लिए बड़े पैमाने पर कार्य किए जा रहे हैं । इस स्थिति का सामना करने में अनाज के बफर स्टाक और जनता को अनाज मिलने की व्यवस्था को मजबूत करने से सरकार को बड़ी मदद मिली । 1972 में इस व्यवस्था द्वारा 1 करोड़ 6 लाख टन अनाज बांटा गया ।

सूखा पड़ने से अनाज की पैदावार में कमी हुई, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में, जहां खेती वर्षा पर निर्भर रहती है । इससे कीमतों पर भी असर पड़ा, जो पिछली मई के बाद काफी बढ़ी हैं । सरकार को इससे बड़ी चिंता हुई है । जनता को अनाज मिलने की व्यवस्था को मजबूत करने के अतिरिक्त, खरीफ फसल के नुक्सान को पूरा करने के लिए, रबी और ग्रीष्मकालीन फसलों की उपज बढ़ाने के लिए एक आपत्कालीन कार्यक्रम शुरू किया गया । आशा है कि इस वर्ष रबी की फसल अच्छी होगी । फिर भी, हमें अनाज के सभी उपलब्ध साधनों को होशियारी से काम में लाना चाहिए और अपव्यय को बचाना चाहिए ।

गेहूं और चावल के अधिशेष को लेकर थोक व्यापारियों को इन चीजों के व्यापार से अलग करके, और जनता, विशेषकर अभावग्रस्त क्षेत्रों और अधिक जरूरतमंद लोगों तक अनाज पहुंचाने की व्यवस्था को मजबूत बनाकर, खाने की चीजों की कीमतों पर नियंत्रण रखा जा सकता है और आम जनता के हितों की रक्षा की जा सकती है । मंडियों में जब गेहूं की अगली फसल आने का समय होगा तब उसका थोक व्यापार सरकार अपने हाथ में ले लेगी । बाद में चावल का थोक व्यापार भी सरकार ले लेगी । इस कार्यक्रम की सफलता के लिए अधिशेष और कमी वाले, दोनों प्रकार के राज्यों को पूरा सहयोग देना होगा ।

उत्पादन को अधिक से अधिक बढ़ाने की आवश्यकता, प्राथमिकताओं की पूर्ती और उपेक्षित क्षेत्रों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ऋण नीति द्वारा नियंत्रण जरूरी है । सरकार ने इस वर्ष बाजार से ऋण लेने का कार्यक्रम अपनाया था उसका मकसद भी यही था कि वाणिज्यिक बैंकिंग प्रणाली की बेशी नकदी खपाई जा सके ।

1972 में, पिछले वर्षों की औद्योगिक उत्पादन की अपेक्षाकृत धीमी गति में तेजी आई और उत्पादन 7 प्रतिशत से अधिक बढ़ा । यदि देश के

अधिकांश भागों में बिजली की कमी न होती तो उत्पादन और अधिक होता। सरकार बिजली पैदा करने, उसके संचार और वितरण में सुधार लाने के लिए अल्पकालीन और दीर्घकालीन उपाय कर रही है।

हाल ही में सरकार ने पांचवी पंचवर्षीय योजना की उत्पादन प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए एकाधिकार और आर्थिक शक्ति के एकत्रीकरण को कम करने के उद्देश्य से अपनी औद्योगिक लाइसेंस नीति के बारे में कुछ स्पष्टीकरण किया है। कई ऐसे उपायों की घोषणा की गई है जिनसे निवेश (इन्वेस्टमेंट) को व्यापक क्षेत्र में बढ़ावा मिलेगा। लाइसेंसों, पूंजीगत माल (केपीटल गुड्स) औद्योगिक वित्तदाता संस्थाओं से वित्तीय सहायता, कम्पनियों और पूंजी निकासन की अर्जियों की बढ़ती हुई संख्या और उनकी स्वीकृति से पता चलता है कि औद्योगिक कार्यकलाप में तेजी आ रही है। सरकार भी इस बात पर बल दे रही है कि जो औद्योगिक लाइसेंस पहले मिल चुके हैं उन पर जल्दी कार्यवाही हो और इसमें तेजी लाने के व्यावहारिक उपाय कर रही है।

अव्यवस्था और अधिशेष पूंजी को फिर से न लगा पाने और संयंत्रों के आधुनिकीकरण न कर सकने के कारण कुछ टेक्सटाइल और इन्जीनियरी यूनिट या तो बंद पड़े हैं या भारी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। सरकार ऐसे यूनिटों की समस्याओं पर ध्यान दे रही है। उत्पादन और रोजगार की सुविधा को बढ़ाने के लिए ऐसे कई यूनिटों का प्रबन्ध इस वर्ष सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है। पश्चिम बंगाल में कानून और व्यवस्था के फिर से स्थापित होने पर, 16 सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत औद्योगिक स्थिति तेजी से सुधर रही है।

समाजवाद की ओर हमारी सतत प्रगति में, आर्थिक क्रियाकलाप का एक व्यापक भाग, सार्वजनिक स्वामित्व और प्रबंध के अंतर्गत आ गया है। इसमें परिवहन और संचार का एक बड़ा भाग, बिजली, कोयला, इस्पात, भारी इंजीनियरी, बैंकिंग, बीमा और बाह्य तथा आंतरिक व्यापार के महत्वपूर्ण अंश शामिल हैं। सरकार द्वारा भावशाली कदम उठाए जाने के परिणामस्वरूप पिछले वर्ष अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्र के यूनिटों में निश्चय ही सुधार हुआ है। वास्तव में इन सभी क्षेत्रों में उत्पादन तथा जन-सेवा का भाव प्रबंधक तथा श्रमिकों की कार्यनिष्ठा तथा सहभागिता की भावना पर निर्भर है। आजकल के संदर्भ में, प्रबंधकों और श्रमिकों दोनों को ही अपनी भूमिका के संबंध में पारस्परिक धारणा छोड़नी होगी। प्रबंधकों को

नई मनोवृत्तियां अपनाकर श्रमिकों को जन-सेवक समझना होगा। श्रमिकों ने सदा समाजवादी परिवर्तन लाने में अगुआ होने की ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। उन्हें अब देखना होगा कि हमारे सार्वजनिक उद्यमों को पूरी तरह सफल बनाकर उन्हें जन-सेवा का आदर्श बनाने में ट्रेड यूनियन की आपसी होड़ कोई बाधा न डाल पाये। जहां तक सरकार का प्रश्न है, वह यह मानती है कि आर्थिक प्रक्रिया में श्रमिकों का विशिष्ट स्थान है। सरकार का हमेशा यह प्रयत्न होगा कि श्रमिकों के न्यायसंगत अधिकारों की रक्षा हो। मैं श्रमिकों से, विशेष रूप से मुख्य उद्योगों और क्षेत्रों में काम करने वालों से, अपील करता हूं कि देश के हितों को सर्वोपरि मानें और बहुत बड़ी संख्या में कम वेतन वाले और बेरोज़गार लोगों की स्थिति को अपने ध्यान से न हटाएं।

निर्बाध उत्पादन, उत्पादकता की वृद्धि, प्रबंध और मजदूरी जैसे महत्व-पूर्ण प्रश्नों के विभिन्न पहलुओं पर ट्रेड यूनियनों में सामंजस्य लाने का सरकार प्रयास करती रहेगी।

सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के कार्य में सुधार लाने के तरीकों पर विचार कर रही है। इनमें से कुछ का पुनर्गठन होल्डिंग कम्पनी के रूप में करने की आवश्यकता होगी जिसमें बास्तविक सार्वजनिक उत्तरदायित्व और औद्योगिक साहसिकता और क्षमता का मिलन हो। इस्पात उद्योग को इन नए तरीकों पर पुनर्गठित करने के लिए 'स्टील अथोरिटी आफ इंडिया लिमिटेड', की स्थापना की गई है। प्रबंध कार्य तथा सामान्य प्रशासनिक क्रियाविधियों में और सुधार लाने के लिए जांच-पड़ताल की जा रही है।

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दृष्टिकोण-पत्र को स्वीकार कर लिया है। इस प्रलेख से उस प्रयास का संकेत मिलता है जो स्वावलम्बन प्राप्त करने और गरीबी हटाने के दोनों लक्ष्यों को उचित समय में पूरा करने के लिए आवश्यक होगा। पंचवर्षीय योजना में कई कार्य-क्रमों को हाथ में लेने का प्रस्ताव है, जैसे न्यूनतम आवश्यकता का राष्ट्रीय कार्यक्रम, रोज़गार सम्बंधी कार्यक्रम, पिछड़े वर्गों और पिछड़े क्षेत्रों के विकास पर बल देना, तथा जन-साधारण द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले माल के अधिक उत्पादन की दृष्टि से उत्पादन के ढांचे का पुनर्गठन करना। गरीबी की समस्या पर प्रत्यक्ष प्रहार करने के लिए ये कार्यक्रम बनाए गए हैं। यह दृष्टिकोण-पत्र सरकार के इस विश्वास पर आधारित है कि विकास और सामाजिक न्याय का अविच्छिन्न संबंध है। सामाजिक न्याय के लिए

आवश्यक है कि विकास अर्थपूर्ण हो और विकास के लिए आवश्यक है कि सामाजिक न्याय दीर्घकालीन और स्थायी हो। कोरे विकास से अधिक महत्वपूर्ण है विकास की श्रेष्ठता और उसका अर्थतत्व।

पंचवर्षीय योजना को जो नई दिशा दी गई है और इसके लक्ष्य की विशालता हमारी जनता के सभी वर्गों से महान प्रयास की अपेक्षा रखती है। बाहरी खतरों का सामना करते समय हमने जो एकता, मनोबल और विश्वास दर्शाया था, हमें उन पर देश के आर्थिक और सामाजिक पुनर्गठन के कार्य में दृढ़तापूर्वक जमे रहना है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि जनता इस चुनौती को स्वीकार करेगी। हमारे गणराज्य की इस पांचवीं संसद् को यह सौभाग्य प्राप्त होगा कि वह इस पंचवर्षीय योजना को आकार प्रदान करके आर्थिक स्वराज्य की दिशा में एक नया मोड़ देगी।

पिछले दो-तीन वर्षों से ग्रामीण जनता के हित के लिए कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं--कृषकों के लिए छोटे और व्यावहारिक कार्यक्रम, ग्राम-रोजगार का कार्यक्रम, सूखा पड़ने वाले क्षेत्रों का कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन श्रमिकों के लिए आवास की व्यवस्था तथा आहार-पुष्टि संबंधी कार्यक्रम। 5,00,000 शिक्षित लोगों को रोजगार देने का एक विशेष कार्यक्रम बनाया गया है। भूमिहीन श्रमिकों के लिए आवास-स्थान की व्यवस्था, ग्राम-रोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पानी और बिजली पहुंचाने की स्कीमों में और गति लाई जाएगी। भूमि-सुधार के कार्य को पूरा करने में तेजी लाई जाएगी।

साथ ही साथ, पंच वर्षीय योजना के लिए प्रारंभिक कार्यक्रम भी तैयार कर लिया गया है। प्रयत्न यह है कि दाल, तिलहन, गन्ना और कपास का उत्पादन बढ़े, सिंचाई प्रायोजनाओं में तेजी आए, बिजली घरों के काम में सुधार हो और नए बिजली घर जो प्रायः बन चुके हैं, जल्दी काम करने लगें। इस्पात तथा रासायनिक खादों के उत्पादन में भी वृद्धि की जा रही है।

सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक विकास दोनों में शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए सरकार पांचवी पंच वर्षीय योजना में राज्य सरकारों के सहयोग से शिक्षा के नव निर्माण और विकास के लिए कदम उठाएगी।

एक विज्ञान और प्रौद्योगिकी योजना तैयार की जा रही है जो आर्थिक योजना का एक अभिन्न अंग होगी। इससे हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी को

स्वावलंबन और आर्थिक विकास के लिए अधिक उद्देश्यपूर्ण तरीके से काम में ला सकेंगे। पर साथ ही ऐसे कदम भी उठाने होंगे जिससे प्राकृतिक परिवेश की स्वच्छता की रक्षा हो सके।

बाह्य अन्तरिक्ष के शांतिपूर्ण प्रयोगों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए एक नया अंतरिक्ष विभाग व अंतरिक्ष आयोग की स्थापना की गई है।

आंध्र प्रदेश की हाल की घटनाओं से सरकार को काफी चिंता हुई है। इस समस्या का एक लम्बा इतिहास है। हमें इस बात की काफी चिंता है कि इस समस्या को सुलझाने में हिंसा का आश्रय लिया जा रहा है। इस प्रकार की हिंसा से हमारे आधारभूत मूल्यों को आघात पहुंचता है। इससे जान-माल को भी काफी नुक्सान पहुंचा है। जिन्होंने नुक्सान उठाया है उनके प्रति मेरी सहानुभूति है। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका शांति से विचार-विमर्श करके तर्कसंगत हल न निकाला जा सके। सरकार अपनी जनता के सभी वर्गों के हितों की रक्षा करना चाहती है। मैं आंध्र प्रदेश के लोगों से अपील करता हूं कि वे एक शांतिपूर्ण हल ढूंढ निकालने में सरकार का पूरा साथ दें।

अब मैं पास और दूर से पड़ौसियों से अपने संबंधों की चर्चा करूंगा। हमारी इच्छा रही है कि पाकिस्तान के साथ आपसी हित के मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित हों। हमने स्थायी शांति की राह पर पहले कदम के रूप में शिमला समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता इस बात पर बल देता है कि हम दोनों अपने मत-भेद किसी बाहरी एजेंसी या तीसरे पक्ष को लाए बिना आपसी विचार-विमर्श और शांतिपूर्ण तरीकों से दूर करें। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि भारत और पाकिस्तान ने आपसी बातचीत द्वारा ही जम्मू और कश्मीर में, एक ऐसी नियंत्रण रेखा बनाई है जिसका दोनों पक्षों को आदर करना है। इसी प्रकार दोनों पक्षों ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर अपनी सेनाएं हटा ली हैं इस प्रकार भारत ने पांच हजार नौ सौ वर्ग मील से अधिक पाकिस्तानी भूमि छोड़ी। पाकिस्तान के प्रति भारत के मित्रतापूर्ण रवैये का ठोस प्रमाण इसी से मिल जाना चाहिए।

पश्चिमी क्षेत्रों के युद्धबंदी अपने-अपने देश को लौटा दिए गए हैं। जहां तक पूर्वी क्षेत्र में भारत और बंगला देश के संयुक्त कमान को आत्म-समर्पण करने वाले युद्धबंदियों का प्रश्न है यह आशा की जाती है कि पाकिस्तान ऐसे कदम उठाएगा कि इस युद्ध से संबंधित तीनों देश इस प्रश्न

पर बातचीत कर सकें। शिमला समझौते से न केवल भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों में सुधार हो सकता है और उनको सामान्य किया जा सकता है, बल्कि सम्पूर्ण उप-महाद्वीप में स्थाई शांति की स्थापना भी हो सकती है। इससे इस उप-महाद्वीप के देश अपनी शक्ति तथा सीमित साधनों को अपनी जनता के आर्थिक और सामाजिक कल्याण के आवश्यक कार्य में तेजी लाने के लिए लगा सकेंगे।

मित्रता, सहयोग तथा शांति की ऐतिहासिक संधि और आपसी हित के विभिन्न मामलों से सम्बद्ध समझौते, बंगला देश के साथ हमारी मित्रता के प्रतीक हैं। बंगला देश ने मुक्ति-संग्राम में हुए विध्वंस से हुई क्षति को पूरा करने में अच्छी प्रगति की है। एक वर्ष के भीतर ही बंगला देश ने अपना संविधान बना लिया है और पहला आम चुनाव होने जा रहा है। शायद ही कोई ऐसा राष्ट्र है जिस ने इतनी कठिनाइयों के बावजूद राजनीतिक स्थायित्व और आर्थिक क्षतिपूर्ति के मार्ग पर इतनी तेजी से कदम बढ़ाया हो। हमें आशा है कि बंगला देश, जिसे 95 देश मान्यता दे चुके हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ में उचित स्थान ग्रहण करेगा। बंगला देश के साथ हमें भी इस बात की चिंता है कि उसके नागरिक पाकिस्तान में रोक रखे गए हैं। हम आशा करते हैं कि वे जल्द ही मुक्त कर दिए जायेंगे।

नेपाल के साथ हमारे मित्रतापूर्ण संबंध और सहयोग बराबर बढ़ रहे है। अप्रैल-मई 1972 में हमें नेपाल के प्रधानमंत्री, सम्माननीय श्री कीर्ति-निधि बिष्ट का अपने देश में स्वागत करने का सुअवसर मिला। हमारी प्रधानमंत्री ने इस महीने के आरम्भ में नेपाल की यात्रा की जिसके दौरान महत्त्वपूर्ण विचार-विनिमय हुए। इन यात्राओं से दोनों देशों के बीच पहले से चले आ रहे निकट के मित्रतापूर्ण और आपसी हित के संबंधों को और मजबूत होने में सहायता मिली।

महामहिम जिग्मे दोरजी वागंचुक के निधन से भूटान ने एक महान राज-नीतिज्ञ और भारत ने एक परमप्रिय मित्र खो दिया। नैरोबी में उनकी मृत्यु के समाचार से भारत में गहरा शोक हुआ। नये नरेश महामहिम जिग्मे सिंगे वांगचुक को हमारा पूरा सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा। हमें विश्वास है कि उनके शासन-काल में भूटान और भारत के बीच निकट मित्रता के संबंद्ध और भी सुदृढ़ होंगे।

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि वियतनाम में बहुत लम्बे अर्से के बाद शांति समझौता हो गया है। वह भयंकर युद्ध, जिसने पूरी एक पीढ़ी को

तबाह किया, और जिससे लोगों को बहुत कठिनाइयों और कष्टों का सामना करना पड़ा, समाप्त हो गया है । हम आशा करते हैं कि इस युद्धविराम के बाद स्थायी शांति आयेगी और वियतनाम की जनता पुनर्निर्माण के कार्य में लग सकेगी । हम यह भी आशा करते हैं कि इसके पड़ौसी राज्य लाओस और कम्बोडिया में शांति और व्यवस्था कायम होगी ।

हमने सभी देशों के साथ मित्रता, आपसी समझ बूझ और सहयोग के सम्बन्ध मज़बूत किए हैं । यह संतोष की बात है कि इनमें से कई देशों के साथ हमारा व्यापार भी बढ़ा । सोवियत संघ के साथ अपने निकट संबंधों की महत्ता हम समझते हैं और उन्हें हम सुदृढ़ करते रहेंगे ।

यह हमारी तीव्र इच्छा है कि संयुक्त राज्य अमरीका के साथ समझबूझ और सहयोग बढ़े ।

यूनाइटेट किंगडम, डेनमार्क और आयरलैंड के प्रवेश के बाद, विशाल योरोपीय आर्थिक समुदाय के रूप में एक नए पश्चिमी यूरोप का प्रकट होना एक महान घटना है । हमारी आशा है कि यह विशाल योरोपीय समुदाय अपने में ही सीमित न रह कर अपनी दृष्टि बाहर भी फैलाएगा और विकासशील देशों की समस्याओं के प्रति सहायक रवैया अपनाएगा ।

हम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में ऐसी सभी गतिविधियों का स्वागत करते हैं, जिनसे तनाव में कमी आई है । मेरी सरकार चीन के साथ सम्बंध सामान्य बनाना चाहेगी । हमारे विचार से संयुक्त राज्य अमरीका और चीन, जापान और चीन, और उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के बीच मेल मिलाप बढ़ाने के प्रयत्न तनाव कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं । यूरोप में जर्मन संघीय गणराज्य द्वारा वर्तमान सीमाओं को मान लेने से जर्मन संघीय गणराज्य और जर्मन जनवादी गणराज्य के बीच विशेष रूप से और यूरोपीय राज्यों के बीच सामान्य रूप से, तनाव में कमी हुई है ।

रोडेशिया का जाम्बिया के साथ अपनी सीमा बंद करने और जाम्बिया के सभी आयात और निर्यात का आना-जाना रोक देने से जाम्बिया की जनता में जो दुःख और रोष स्वाभाविक था उसके प्रति हमारी सहानुभूति थी । हमने जाम्बिया सरकार से उस देश को यथायोग्य सहायता देने की बात की है । हमें खेद है कि रोडेशियाई कार्यवाही से उत्पन्न स्थिति के कारण, पिछले महीने डा० केनेथ कौण्डा भारत की राजकीय यात्रा पर नहीं आ सके ।

उगाण्डा से एशियाइयों का निष्कासन, सरकार के लिए भारी चिंता का विषय है, क्योंकि इससे भारतीय मूल के ऐसे कई हजार लोग बेघर हुए जिन्होंने उगाण्डा को अपना घर बनाया था और इसके विकास में योग दिया था। मैंने इथोपिया, तनज़ानिया और जाम्बिया की अपनी यात्रा में पाया कि इससे उन अफ्रीकी देशों के, जो आर्थिक विकास, जातीय समानता और सहिष्णुता के लिए प्रयत्नशील हैं, उदार विचारों वाले समुदायों को काफी हैरानी हुई है। उपनिवेशवाद, अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष में हम अफ्रीकी जनता के साथ हैं। मुझे प्रसन्नता है कि अफ्रीकी देशों के साथ हमारा तकनीकी और आर्थिक सहयोग तेजी से बढ़ रहा है।

हमें खेद है कि अरब क्षेत्रों पर इजराइली आधिपत्य से उत्पन्न समस्या के समाधान की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है। इस नाजुक मामले पर हमारा रवैया उन सिद्धान्तों पर आधारित है जिनका हमने संयुक्त राष्ट्रसंघ के पिछले प्रस्ताव में फिर से समर्थन किया है, जिसमें इज़राइल से यह कहा गया है कि वह इन क्षेत्रों से हट जाए।

माननीय सदस्यगण, हमारी आंतरिक और बाहरी नीतियों के औचित्य तथा हमारी अर्थव्यवस्था, हमारी संस्थाओं और हमारी जनता की आधारभूत जीवन शक्ति कई बार सिद्ध हो चुकी है, जब-जब देश को गंभीर स्थितियों का सामना करना पड़ा है। मुझे विश्वास है कि हमारी वर्तमान कठिनाइयां अस्थायी हैं और हम इनका सफलतापूर्वक सामना करने से अधिक संगठित और अनुशासित बनेंगे। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें स्पष्ट दृष्टि और एक ही लक्ष्य से काम करना है।

आप इस वर्तमान अधिवेशन में अगले वित्तीय वर्ष के लिए अनुदानों की मांगों पर तथा विधायी कार्य पर विचार करेंगे। सरकार संसद् के समक्ष कोयला खान (प्रबंध अधिग्रहण) अध्यादेश 1973 के स्थान पर एक विधेयक पेश करेगी। सरकार संसद् के समक्ष एक व्यापक कर नियम (संशोधन) विधेयक भी पेश करना चाहती है। इसके अतिरिक्त, विदेशी अंशदानों को नियमित करने के लिए कानून बनाना, छोटे और मध्यम समाचारपत्रों को वित्तीय सहायता देने के लिए एक समाचारपत्र वित्त निगम की स्थापना करने का विधेयक तथा चुनाव कानून सीनेमैटोग्राफी अधिनियम तथा दिल्ली विकास अधिनियम में संशोधन से संबंधित विधेयक ससंद् में पेश किए जायेंगे।

सम्माननीय सदस्यगण ! अपनी शुभ कामनाओं के साथ मैं नए प्रयासों के लिए आपका आह्वान करता हूं।

ADDRESS

Honourable Members,

You have assembled to perform the exacting tasks which lie ahead of you. Not only have you to transact the formal legislative business but also to take stock of the problems that the nation faces and give guidance to the Government and the people.

Barely had the country overcome the extraordinary challenges of 1971, when we were confronted with fresh problems. The after-effects of the influx of refugees and the war were aggravated by drought in several parts of the country. Our hearts go out to all those who have been affected by drought and in certain other areas by cyclone and floods. Works on a large scale have been undertaken in all affected areas to provide employment and relief. Our buffer stock of foodgrains, along with the strengthening of the public distribution system, enabled the Government to meet the situation. In 1972, about 10.6 million tonnes of grains were distributed through the public system.

Inevitably, the drought led to a fall in food production, particularly in the areas of rain-fed cultivation, and this, in turn, influenced prices, which have registered a sharp increase since May last year. This has been a matter of grave concern to my Government. In addition to strengthening the public distribution system, as mentioned above, an emergency programme was launched to increase *rabi* and summer foodgrains production to offset the loss of *kharif* output. We expect a good *rabi* crop this year. None the less, we must husband all available food resources and avoid waste.

Prices of food articles can be brought under check and the interests of the common people safeguarded by taking over the surplus of wheat and rice, by eliminating wholesale traders and by organising distribution of

foodgrains, especially to scarcity areas and the vulnerable sections of the population. The wholesale trade in wheat will be taken over from the coming wheat marketing season. This will be followed by the take-over of wholesale trade in rice. The success of this programme calls for the whole-hearted co-operation of surplus as well as deficit States.

The emphasis on credit policy continues to be one of restraint, consistent with the need to maximise production, meet priorities and attend to hitherto neglected sectors. The Government's programme of market borrowings during the year was designed to absorb the surplus liquidity of the commercial banking system.

The relatively sluggish rate of growth of industrial production in 1970 and 1971 gave place to an upward trend in 1972. Industrial production increased by over 7% during the year. It would have been still higher but for the shortage of power in most parts of the country. Government is taking short-term and long-term measures to improve the generation, transmission and distribution of power.

Government has recently clarified its industrial Licensing Policy of curbing monopolies and the concentration of economic power, consistent with the objectives and the priorities of production during the Fifth Five Year Plan. Several measures which should stimulate investment on a wide front have been announced. The larger number of applications and approvals for licences, capital goods, finance from industrial financing institutions, registration of companies and capital issues—all indicate a gathering tempo of industrial activity. Government is also laying emphasis on the active implementation of industrial licences already granted and is devising practical measures to increase the pace of implementation.

Government has devoted attention to the problems of textile and engineering units which have been lying closed or are facing serious difficulties due to mismanagement and failure to re-invest surpluses and to modernise the plants. The management of a number of these units has been taken over this year in order to revive production and ensure continuous employment. With the restoration of law and order in West Bengal, industrial recovery is gaining momentum under a 16-point programme.

In our steady march towards socialism, an increas ingly wide segment of economic activity has been brought under public ownership and management. This covers a major part of transport and communications, power, coal, steel, heavy engineering, banking, insurance and important segments of external and internal trade. As a result of the vigorous steps taken by Government, a definite improvement was discernible in most public sector units last year. Ultimately, production and the quality of service to the people in all these fields depend on the dedication and sense of involvement of managers and workers. In the changed context, both managers and workers have to give up the traditional concept of their roles. Management has to develop new attitudes and look upon workmen as participants in the service of the people. Workers should not allow trade union rivalry to prevent them from fulfilling their historic role of being in the vanguard of socialist transformation by making our public enterprises successful and models of service to the people. On its part, Government recognises the central role of the worker in the economic process and will do everything in its power to ensure that his legitimate rights are protected. I appeal to workers, particularly in vital industries and sectors, to place the country first and keep in mind the conditions of the vast multitude of the low paid and the unemployed.

Government will continue its efforts to bring about a consensus among trade unions on the critical prob-

lems of uninterrupted production, increase in productivity, wages and participation in management.

Government has been considering methods of improving the performance of public sector undertakings. Some of these need to be restructured as holding companies so as to combine entrepreneurial vigour with effective public accountability. The Steel Authority of India Ltd. has been set up to reorganise the steel industry on these new lines. Further improvements in management practices and general administrative procedures are under examination.

The Approach to the Fifth Five Year Plan has been approved by the National Development Council. The Approach indicates the effort necessary to attain the twin objectives of self-reliance and the removal of poverty within a reasonable period. A number of programmes proposed to be taken up in the Fifth Plan—the National Programme of minimum Needs, the Employment programme, the accent on the development of backward classes and backward regions and the reorientation of the pattern of production with emphasis on goods of mass consumption—are designed directly to attack the problem of poverty. The Approach is based on Government's considered view that growth and social justice are interlinked. Social justice needs growth to be meaningful and growth needs social justice to be sustained and durable. The quality and content of growth are more important than growth by itself.

The new directions given to the fifth Plan and the magnitude of its targets call for major efforts on the part of all sections of our people. We have to sustain and transfer the unity, morale and confidence which we demonstrated in meeting external danger to the fields of economic and social transformation of the country. I have no doubt that people will respond to this challenge. It will be the privilege of this fifth Parliament of our

Republic to give shape to the Fifth Five Year plan and make it the turning point in our advance towards economic independence.

A number of programmes intended for the benefit of rural masses have been in operation for the last two to three years—the small and Marginal Farmers' Programme, the programme for Rural Employment, Drought Prone Areas Programme provision of house sites to landless labour in rural areas and the Nutrition Programme. A special programme to provide employment opportunities for 5 lakh educated persons in the coming year has been formulated. These schemes for the provisions of house sites to landless labour, creation of rural employment as also provision of water supply and electricity to rural areas will be further accelerated. The implementation of land reforms will be expedited.

Simultaneously, a programme of advance action for the Fifth Plan has been prepared. It is proposed to increase the production of pulses, oilseeds, sugarcane and cotton, and to accelerate irrigation projects, improve the working of power stations and hasten the commissioning of those which are nearing completion. The production of steel and fertilisers is also being increased.

Realising the significance of education, both for social transformation and economic growth, Government has decided to take steps, in concert with State Governments, for programmes of educational reconstruction and development in the fifth Five Year Plan.

A science and Technology plan, which will form an integral part of the economic plan, is being prepared. This will help us to harness science and technology in a more purposive way for self-reliance and economic growth. At the same time, we must take measures to preserve the quality of the natural environment.

A new Department of Space and a Space Commission have been constituted to utilise fully the benefits that

can accrue to the country as a result of the peaceful uses of outer space.

Government has been deeply concerned at the recent developments in Andhra Pradesh. The problem in that State has a long history. We view with grave anxiety the resort to violence in an attempt to settle this problem. Such violence is opposed to the basic values we cherish; it has resulted in the loss of valuable lives and extensive damage to public property. I express my sympathy and sorrow for those who have suffered. There is no problem for which a reasonable solution cannot be found through calm and rational discussion. Government's sole consideration is to safeguard the interests of all sections of our people. I appeal to the people of Andhra Pradesh to co-operate fully with the Government in finding a peaceful solution.

I now turn to relations with neighbours, near and far. We have desired the establishment of mutually beneficial and friendly relations with Pakistan. We signed the Simla Agreement as the first step towards the establishment of durable peace. The Agreement lays emphasis on bilateralism for the solution of differences by peaceful means and excludes outside agencies and third party involvement. I am glad that India and Pakistan have been able, through bilateral negotiations, to determine a line of control in Jammu and Kashmir which is to be respected by both sides. Similarly, both sides have withdrawn their troops to the international border; in the process, India has vacated about 5900 sq. miles of Pakistan's territory. This by itself is concrete evidence of India's friendly intentions towards Pakistan.

The prisoners of war of the Western front have been exchanged. It is hoped that Pakistan will create the necessary conditions which would enable the three parties to the conflict in the Eastern theatre to hold discussions for the repatriation of the prisoners of war who surrendered to the joint command of India and

Bangladesh Forces. The Simla Agreement holds promise not only of improving and normalising relations between India and Pakistan but also of establishing durable peace in the sub-continent as a whole. This will enable the countries of the sub-continent to devote their energies and limited resources to the urgent task of furthering the economic and social well-being of their peoples.

Our friendship with Bangladesh has taken concrete shape in the historic Treaty of Friendship Co-operation and Peace and in Agreements on various matters of mutual interest. Bangladesh has made remarkable recovery from the revages of the liberation struggle. Within a year, Bangladesh has adopted a Constitution and is about to hold her first General Elections. Seldom has a nation which has been through so harrowing an ordeal progressed so rapidly on the road to political stability and economic recovery. We hope that Bangladesh, which has been recognised by 95 countries, will take her rightful place in the United Nations. We share Bangladesh's concern for her nationals who are detained in Pakistan and hope that they will soon be released.

Our friendly relations and close co-operation with Nepal continued to grow during the year. In April-May 1972, we had the pleasure of reciveing the Prime Minister of Nepal, the Right Honourable Shri Kirti Nidhi Bista, as our guest. Our Prime Minister paid a visit to Nepal earlier this month and a useful exchange of views took place during the visit. These visits have helped to further strengthen the already close, friendly and mutually beneficial relations between the two countries.

In the death of His Majesty Jigme Dorji Wangchuk, Bhutan lost a great statesman and India a dear friend. The news of his demise in Nairobi was received in India with a deep sense of shock and sorrow. We extend our co-operation to the new King, His Majesty Jigme Singye

Wangchuk and are confident that during his rule the existing ties of close friendship between Bhutan and India will be further strengthened.

We are happy that the long-delayed peace agreement in Vietnam has been concluded and that the terrible war that raged for a whole generation, causing great suffering and hardship to the people, has ended. We hope that the ceasefire will lead to a durable peace which will enable the people of Vietnam to address themselves to the tasks of reconstruction. We hope also that peace and order will come to the neighbouring States of Laos and Cambodia.

We have strengthened our ties of friendship, mutual understanding and co-operation with all countries. It is gratifying that with many of them our trade has also registered an increase. We value our close ties with the Soviet Union and will continue to strengthen them.

It is our earnest desire to improve understanding and co-operation with the United States of America.

The emergence of a new Western Europe, following the entry of the United Kingdom, Denmark and Ireland into the enlarged European Economic Community is a major development. It is our hope that this bigger European Community will look outward rather than inward and pursue a helpful approach to the problems of the developing countries.

We welcome the positive trends in the international situation which have created an atmosphere of *detente*. My Government would like to normalise relations with China.. We view the moves towards reconciliation between the United States of America and China, Japan and China, and between North and South Korea as positive steps in favour of the relaxation of tensions. In Europe, the acceptance by the Federal Republic of Germany of existing frontiers has led to relaxation of

tensions between the Federal Republic of Germany and German Democratic Republic, in particular, and other European States in general.

We shared with the Zambian people their shock and anger when Rhodesia closed its border with Zambia and stopped the transit over Rhodesian soil of all Zambia's imports and exports. We have offered to help the Zambian Government with such assistance as we can give. We regret that because of the situation created by the Rhodesian action, the Zambian President, Dr. Kenneth D. Kaunda, could not pay his State visit to India last month.

The expulsion of Asians from Uganda has been a matter of serious concern to the Government as it has led to the uprooting of several thousands of people of Indian origin who had made Uganda their home and had contributed to its development. During my visits to Ethiopia, Tanzania and Zambia, I found how these actions had embarrassed enlightened opinion in African countries which are striving for rapid economic development and racial equality and tolerance. We continue to make common cause with the people of Africa who are fighting against colonialism, injustice and oppression. I am happy that our technical and economic co-operation with African countries is rapidly increasing.

We regret that there has been no progress towards a solution of the problem created by Israel's occupation of Arab territories. Our stand on this critical issue is based on principles which we have again supported in the last resolution in the United Nations calling on Israel to vacate these territories.

Honourable Members, the correctness of our internal and external policies and the basic vitality of our economy, our institutions ond our people have been proved time and again whenever the country has had to face grave situations. I am sure that our present difficulties are temporary and that we shall overcome them and

emerge more united and disciplined. We shall have to work with clarity of vision and unity of purpose to meet these challenges.

During your present Session, you will be dealing with the Demands for Grants for the next financial year as well as with legislative business. Government will bring before Parliament a Bill to replace the Coal Mines (Taking over of Management) Ordinance, 1973. Government also intends to bring before Parliament a Comprehensive Taxation Laws (Amendment) Bill. In addition, legislation to regulate foreign contributions and to establish a Newspaper Finance Corporation for rendering financial assistance to small and medium newspapers as well as Bills to amend the Election Law, the Cinematograph Act and the Delhi Development Act will be among the measures that will be brought before Parliament.

Honourable Members, I summon you to your new endeavours and wish you well.

कुछ माननीय सदस्य उठें ।

अध्यक्ष महोदय : कृपया शान्ति रखिए। (व्यवधान) । यदि आप मेरी अनुमति के बिना बोलेंगे तो वह कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया जायेगा (व्यवधान) । आपने आते ही यह काम शुरू कर दिया है। अभी तो तीन महीने बैठना है। इतनी तेजी से शुरू करके आप थक जायेंगे। (व्यवधान) यही प्रिसीडेंट यहां चला आ रहा है कि पहले दिन और कोई काम नहीं होता। आज तो प्रेजीडेंट एड्रेस की कापी यहां 'ले' की जाएगी। उसके बाद आबिचुरी रैफरेंसिस होंगे। आप जो कुछ आज कर रहे हैं वह कल ही करें तो अच्छा है। कल प्रत्येक बात पर विचार किया जायेगा। अब हम कार्यसूची के अनुसार कार्य आरम्भ करेंगे। मैं निधन सम्बन्धी उल्लेख ले रहा हूं।

निधन सम्बन्धी उल्लेख

OBITUARY REFERENCES

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, आज हम दो माह के पश्चात् एकत्र हुए हैं। इस बीच कुछ मित्रों के निधन के बारे में सदन को अवगत कराना मेरा कर्त्तव्य है।

व्यवधान*

25 दिसम्बर, 1972 को श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की दुखद मृत्यु से हम सभी को आघात पहुंचा है। किसी देश के इतिहास में ऐसे क्षण दुर्लभ होते हैं जब उस देश के निवासी जाति, धर्म, राजनैतिक सम्बद्धता अथवा

*कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया गया ।
Not recorded.

धारणाओं को भूलकर उस व्यक्ति की मृत्यु का शोक मनाते हैं, जिसने उनके बीच विशिष्टता अर्जित की है। जैसा कि सर्वविदित है, राजाजी एक ऐसे पुरुष थे, जो अपने त्याग सादगी, और कर्त्तव्यनिष्ठा के फलस्वरूप स्वयं में एक संस्था बन गए थे। उन्हें न केवल अपने देश में ही अपितु विश्वभर में एक विशिष्ट राजनेता समझा जाता रहा है। इन सब बातों से बढ़कर वह पूर्णतया एक महान देश भक्त थे।

राजाजी ने अपना सार्वजनिक जीवन 1917 से आरम्भ किया था जब वह सलेम नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। महात्मा गांधी के राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश ने राजाजी को स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने 1919 के रोलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह में भाग लिया और अगले वर्ष सिविल अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। वह कई बार जेल गए और महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी समझें गए।

उनका संसदीय कार्य 1933 में आरम्भ हुआ जब वह मद्रास विधान सभा के सदस्य बने। बाद में 1937 से 1939 तक वह राज्य के मुख्यमन्त्री रहे। वर्ष 1946-47 में वह संविधान सभा के सदस्य रहे तथा वर्ष 1950-52 में अस्थायी संसद के सदस्य रहे। वर्ष 1946-47 के दौरान वह अन्तरिम सरकार के सदस्य रहे और अगस्त 1947 से जून 1948 तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे। वह जुलाई और दिसम्बर 1950 के बीच केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में बिना विभाग के मन्त्री रहे, वर्ष 1950-51 में केन्द्रीय सरकार में गृहमन्त्री तथा 1952 से 54 तक मद्रास के मुख्यमंत्री रहे।

नवम्बर 1947 में उन्होंने भारत के गवर्नरजनरल के रूप में कार्य किया और बाद में पुनः जून 1948 से जनवरी 1950 तक उस पद पर प्रतिष्ठित रहने वाले प्रथम तथा अकेले भारतीय थे। देश के प्रति विशिष्ठ सेवाओं के कारण ही वह देश के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए जो उनकी असाधारण योग्यता का सम्मान सूचक है। देश के प्रति उनकी सेवाओं को मान्यता देते हुए वर्ष 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

राजाजी के व्यक्तित्व में एक राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, बुद्धिजीवी, साहित्यकार, पत्रकार और एक विद्वान का अनूठा सम्मिश्रण था। निःसन्देह देश ने पैदा किये महान नेताओं में से वह एक थे। वह परहितवादी तथा विभिन्न बोलियों के कुशल पंडित थे। देश की कठिन से कठिन समस्याओं को हल करने के लिए वह सदैव ही कोई न कोई समाधान पेश करते थे। उन्होंने राजनैतिक, दार्शनिक तथा साहित्यिक पुस्तकों का एक भव्यकोष प्रदान किया है। जो भविष्य के लिए देश की विभूति है। उनकी पुस्तकें उनकी कुशाग्रबुद्धि, बौद्धिक तर्क, स्पष्ट दृष्टि तथा अपने विचारों के प्रति उनकी दृढ़ता के परिचायक हैं। वह दीर्घायु तक जीवित रहे और सम्मान के साथ मृत्यु पायी।

मुझे सदन को सात और मित्रों की दुःखद मृत्यु की सूचना भी देनी है। उनके नाम हैं डा: शौकतुल्लाह शाह अंसारी, श्री बाकर अली मिर्जा, श्री कृष्णकुमार चटर्जी, श्री जी०डी० सोमानी, मेजर जनरल हिम्मत सिंह जी, श्री महादेवप्पा रामपुरे और श्री जियालाल मंडल।

श्री शौकतुल्लाह शाह अंसारी वर्ष 1951-52 के दौरान प्रथम लोकसभा के सदस्य रहे। वह तत्कालीन राज्य हैदराबाद से निर्वाचित होकर आये थे। भारत के एक सर्वविदित परिवार में पैदा हुए थे। उन्होंने विभिन्न प्रकार से देश की सेवा की। उन्होंने 1947 तक चिकित्सा कार्य किया और बाद में उन्होंने लाओस स्थित अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग की अध्यक्षता सहित अनेक राजनयिक पदों पर कार्य किया। वह 1968-71 के दौरान उड़ीसा के राज्यपाल रहे।

श्री बाकरअली मिर्जा अन्तरिम संसद और आंध्रप्रदेश से तीसरी और चौथी लोकसभा के सदस्य रहे। वह एक बहुत ही मिलनसार और स्पष्टवक्ता होते हुए एक सक्रिय संसद शास्त्री थे। उन्होंने इस्तम्बोल में हुए अन्तरसंसदीय संघ सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया और वह रूस और मंगोलिया संसदीय शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में भी गए। 1 जनवरी, 1973 को 73 वर्ष की आयु में हैदराबाद में उनका निधन हुआ।

श्री कृष्ण कुमार चटर्जी वर्ष 1967-70 के दौरान चौथी लोक सभा के सदस्य थे। वह पश्चिम बंगाल के हावड़ा निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए थे। उन्होंने 10 वर्ष तक हावड़ा के नगरपालिका आयुक्त के पद पर कार्य किया और वर्ष 1956-57 के दौरान पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य रहे।

वह नेताजी सुभाष बोस के निकट सहयोगी थे और स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के कारण कई बार जेल गए। लोक सभा के सदस्य के रूप में वह सभा की कार्यवाही में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। बाहर भी वह अनेकों शिक्षा संस्थानों

तथा मजदूर संघ की गतिविधियों से सम्बद्ध थे। 65 वर्ष की आयु में 7 जनवरी, 1973 को हावड़ा में दुखद परिस्थितियों में उनका निधन हुआ।

श्री जी० डी० सोमानी राजस्थान के नागौर-पाली और धौसा निर्वाचन क्षेत्र से वर्ष 1952 से 62 के दौरान प्रथम और द्वितीय लोक सभा के सदस्य रहे। वह एक विख्यात उद्योगपति परिवार से सम्बन्धित थे। सभा की कार्यवाही में वह विशेषतया उद्योग से सम्बन्धित मामलों में, सक्रिय रुचि लेते थे। वह बहुत से सामाजिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थानों से सम्बद्ध थे। 65 वर्ष की आयु में 8 जनवरी, 1973 को बम्बई में उनका निधन हो गया। उनके पुत्र श्री एन०के० सोमानी पिछली लोकसभा के सदस्य थे। हम उनके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं।

मेजर जनरल हिम्मत सिंह जी वर्ष 1946-47 के दौरान भारतीय सेनाओं के प्रतिनिधि के रूप में केन्द्रीय विधान सभा के सदस्य थे। वर्ष 1947-48 तथा 1950-52 के दौरान क्रमशः संविधान सभा तथा अन्तरिम संसद के सदस्य रहे। उन्होंने संघीय संविधान समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। वर्ष 1952 में वह लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए परन्तु हिमाचल प्रदेश के लैफ्टीनेन्ट गर्वनर नियुक्त हो जाने पर उन्होंने लोक सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। वह 1950-52 के दौरान रक्षा मन्त्रालय में उपमन्त्री भी रहे। 75 वर्ष की आयु में 9 जनवरी, 1973 को जामनगर में उनका निधन हो गया।

श्री महादेवप्पा रामपुरे मैसूर के गुलबर्गा निर्वाचन क्षेत्र से वर्ष 1957 से 67 के दौरान दूसरी और तीसरी लोकसभा के सदस्य रहे। इससे पूर्व वह वर्ष 1952-57 के दौरान मैसूर की विधान सभा के सदस्य रहे थे और वहां उन्होंने उपसभापति के पद पर कार्य किया। एक महान संगठन कर्ता, समाज सेवी होते हुए वह बहुत सी शिक्षा संस्थानों से सम्बद्ध थे। वह वरिष्ठ संसद सदस्य थे और जब सभा की कार्यवाही में भाग लेते थे, बड़े उत्साह से बोलते थे। 53 वर्ष की आयु में बंगलौर में 5 फरवरी, 1973 को उनका निधन हो गया।

श्री जियालाल मण्डल बिहार के खगारिया निर्वाचन क्षेत्र से वर्ष 1957 से 67 के दौरान द्वितीय और तृतीय लोकसभा के सदस्य रहे। इससे पूर्व वह वर्ष 1957-59 के दौरान बिहार की विधान सभा के सदस्य थे। एक कृषक होते हुए अस्पृश्यता को दूर करने के लिए रचनात्मक कार्य किया। उन्होंने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया और जेल गए। वह बहुत से सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थान से सम्बद्ध थे। 58 वर्ष की आयु में सहरसा में 9 फरवरी, 1973 को उनका निधन हो गया।

हम इन मित्रों के निधन पर गहन शोक प्रकट करते हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोक संतप्त परिवार के साथ अपनी संवेदनायें प्रकट करने में सभा मेरा साथ देगी।

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इलैक्ट्रानिक्स मंत्री, सूचना और प्रसारण मंत्री तथा अन्तरिक्ष मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : अध्यक्ष महोदय, सभा का प्रत्येक सत्र बिछड़े साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के गरिमापूर्ण कार्य से आरम्भ होता है। गत अन्तर्सत्र में हमारे बहुत से पहले के साथी हमसे बिछुड़ गए हैं।

इन सब में आयु उपलब्धियों तथा योग्यता में श्री राजगोपालाचारी अग्रगण्य थे। वह भारत के अन्तिम गवर्नर जनलर थे और इस पर कार्य करने वाले पहले और एकमात्र भारतीय थे जो स्वतन्त्रता संग्राम में हमारी विजय का प्रतीक है। वह बहुत से उच्च पदों पर रहे। उनकी महानता उन पदों के कारण नहीं थी, प्रत्युत उसका कारण उनकी तीव्र और प्रखर बुद्धि और असाधारण प्रतिभा तथा भारत के प्रति ही नहीं अपितु मानवता के प्रति उनका समर्पण था। उन्होंने लगभग 40 वर्ष तक कांग्रेस की सेवा की और स्वतन्त्र पार्टी की नींव डाली। परन्तु किसी दल की सीमा में भी वह बंधे हुए नहीं थे। उन्होंने भारतीय सभ्यता की महान पुस्तकों का गहन अध्ययन किया। भारतीय संस्कृति के वह बहुत बड़े व्याख्यात थे।

मानवता की समस्याओं के प्रति उनकी गहन चिन्ता, युद्ध और शान्ति की समस्या, भौतिक दबावों से नैतिक मूल्यों के संरक्षण की समस्या आदि के माध्यम से उन्होंने मानवीय संस्कृति का संरक्षण किया।

सभा के बहुत से सदस्य उन्हें देश में जन्मे महान संसद शास्त्री के रूप में हमेशा याद रखेंगे। उनकी प्रखर बुद्धि, तर्क शक्ति और प्रशासनिकता की राजनैतिक समस्याओं के प्रति उनकी सूझ बूझ तथा गहन अध्ययन हमारे लिए तथा हमारे पश्चात् आने वालों के लिए एक आदर्श रहेगा।

जैसा कि मैंने उनकी मृत्यु पर गहन शोक प्रकट होते हुए भी कहा था हम से व्यक्ति नहीं बिछड़ा है वरन् हमारी एक शक्ति का अन्त हो गया है।

हम राजा जी के परिवार के सदस्यों के प्रति तथा राजा जी से निकट सम्पर्क रखने वालों के प्रति अपनी संवेदनायें प्रकट करते हैं। परन्तु यह हानि केवल उन्हीं तक सीमित नहीं है ।

डा० शौकत अंसारी ने अपना जीवन एक प्रसिद्ध चिकित्सक के रूप में आरम्भ किया, परन्तु राष्ट्रसेवा, कूटनीति और प्रशासन में भी उन्होंने अपनी क्षमता दिखाई। उनका सम्बन्ध ऐसे परिवार से था जिसने निरन्तर परिश्रम किया और अपना सब कुछ राष्ट्रीय कार्य के लिए अर्पण कर दिया। उनमें धर्मनिरपेक्षता के सभी गुण मौजूद थे। वह लाओस, वियतनाम और सूडान में हमारे देश के प्रतिनिधि रहे तथा उड़ीसा के गवर्नर रहे।

श्री बाकर अली मिर्ज़ा की शैक्षिक योग्यतायें उनकी प्रतिभा की प्रतीक हैं। वह आरम्भ से मजदूर संघ आन्दोलन से सम्बद्ध हो गए और साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ते रहे। उन्होंने आन्ध्रप्रदेश की विविध रूप से सेवा की, वह निष्ठावान संसद शास्त्री थे।

श्री के० के० चटर्जी ने अपना सारा वयस्क जीवन राजनीति में व्यतीत किया। युवक नेता, स्वतन्त्रता सेनानी, नेताजी सुभाष बोस के निकट के साथी, कार्मिक संघी और लेखक के रूप में उन्होंने बंगाल तथा देश की गहन भावना, निष्ठा तथा अथक परिश्रम से सेवा की।

श्री गजाधर सोमानी बहुत बड़े व्यापारी थे और व्यापार तथा उद्योग से सम्बद्ध अनेक संस्थानों के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने बहुत से समाज सेवा संगठनों का समर्थन किया। आर्थिक मामलों में उनकी रुचि सभा को स्मरण रहेगी।

मेजर जनरल हिम्मत सिंह जी ने संसद को रक्षा सम्बन्धी जानकारी दी जो उन्होंने सेना में कार्य करके प्राप्त की थी। उपरक्षा मन्त्री और तत्पश्चात् हिमाचल प्रदेश के लैफ्टीनेंट गवर्नर के रूप में उन्होंने सम्मान अर्जित किया। वह बहुत ही अच्छे तथा विशाल हृदय व्यक्ति थे। दूसरों के कल्याण की उन्हें गहन चिन्ता रहती थी।

श्री महादेवप्पा रामपुरे पुरानी हैदराबाद रियासत में और बाद में मैसूर में एक प्रमुख कांग्रेसी थे। उन्होंने गुलबर्गा में बहुत से शिक्षा संस्थानों की स्थापना की।

श्री जियालाल मण्डल अपनी किशोरावस्था में ही राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गए थे। उन्होंने राजनैतिक कार्यों और सृजनात्मक कार्यों में एक समान शक्ति लगायी। उन्होंने बख्तियारपुर के किसानों को संगठित किया और बिहार विधान सभा और राष्ट्रीय सभा दोनों में एक विधायक के रूप में ख्याति प्राप्त की।

हम इन सहयोगियों, महान भारतीयों के निधन पर गहन शोक प्रकट करते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं आप से प्रार्थना करती हूं कि आप हमारी हार्दिक सहानुभूति तथा संवेदनाओं को उनके परिवारों तक पहुंचायें।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : मैं अपनी पार्टी की ओर से श्री राज गोपालाचारी, डा० शौकतुल्ला अंसारी, श्री बाकर अली मिर्जा, श्री कृष्ण कुमार चटर्जी, श्री जी० डी० सोमानी, मेजर जनरल हिम्मत सिंह जी, श्री महादेवप्पा रामपुरे और श्री जियालाल मंडल के निधन पर व्यक्त भावनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

मेरी प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवारों तक हमारी भावनाएं पहुंचा दें ।

Shri Sarjoo Pandey (Gazipur) : Sir, some of the persons expired during this inter-session period were my friends.

So far as Shri C. Rajagopalachari is concerned the whole country is aware of the role he had played in our freedom struggle.

Dr. Shaukatullah Ansari was the finest man I had ever come across. He belonged to my own District.

Shri Baker Ali Mirza was a great orator. He was a supporter of Hindu-Muslim unity.

The manner in which Shri Krishan Kumar Chatterji has ended his life is very sad. It is reported that he has committed suicide due to unemployment Shri G. D. Somani" Shri Rampure and Shri Jiya Lal Mondal have left us which is very sad.

I on behalf of my party request the speaker to convey our condolences to the bereaved families.

Shri Atal Bihari Vajpayee (Gwalior) : I on behalf of myself and my party pay tributes to departed souls.

Rajaji was an extraordinarily brilliant man. He was a great patriot, an able administrator and a great scholar of Indian culture. With his death the link between the old generation and the present one has broken. He was undaunted in his belief and convictions and lent support to the voice of dissent which is necessary for democracy. The loss with his death is irrepairable.

I pay homage to all these departed souls.

श्री जी० विश्वनाथन (वान्डीवाड़ा) : राजा जी के निधन से देश को महान क्षति हुई है जो अब पूरी नहीं की जा सकती है ।

धरती पर कोई विषय ऐसा नहीं है जिस पर उनका अधिकार नहीं था । हम उनके मत का विरोध कर सकते हैं परन्तु उनके तर्क के साथ नहीं ।

अपने दल तथा साथियों की ओर से मैं राजाजी के परिवार से संवेदना प्रकट करता हूं ।

Shri Shyamnandan Mishra (Begusari) : Eight stars of Indian sky have passed away and Shri Rajagopalachari was like a sun amongst them. He was a tree Karamyogi and a super human-being. He represented the tradition of Bhishm Pitameh and Janak. He led a pious and simple life and was an embodiment of self discipline and strong will power.

In respect of democracy Rajaji said : 'A dumb people and a deaf Government cannot make democracy, do not make democracy.' Every member of Parliament should remember this saying of Rajaji. These words should be inscribed somewhere in the Parliament House along with words of Tilak that 'Swaraj is our birth-right'.

Rajaji's life will always give inspiration to us. Something should be done to perpetuate the memorary of Rajaji either by Government or by Parliament so that his life may always be a source of guidance to all of us.

The death of other colleagues who worked with us in this Parliament is a matter of great sorrow. Shri Rampure died so young. The death of Shri Jiyalal Mandel was a bolt from the blue. All our former colleagues had played a notable role in bringing about national consciousness and emotional integration in the country. We shall always remember them.

श्री पी० के० देव (कालाहांडी) : मैं अपने आप को तथा स्वतन्त्र पार्टी को स्वतन्त्र पार्टी के संस्थापक श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के निधन के संबन्ध में व्यक्त भावनाओं से संबद्ध करता हूं । उनकी मृत्यु से विश्व ने एक उदार राजनीतिज्ञ खो दिया है । वह महान बुद्धिजीवी थे तथा महात्मा गान्धी के सहयोगियों में प्रमुख थे ।

राजाजी भारतीय राजनीति के मंच पर सात दशकों तक छाये रहे । उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई । वह सदा मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्षशील रहे ।

वृद्धावस्था में भी वह दूरदर्शी थे । उन्होंने तानाशाही समाजवादी प्रवृत्तियों से लड़ने के लिये स्वतंत्र दल की स्थापना की थी ।

उन्होंने उच्च कोटि के ग्रन्थों यथा भगवद् गीता, महाभारत तथा कुरान का अध्ययन किया था तथा उनकी व्याख्या भी की थी । वह पहले व्यक्ति थे जिन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया था । प्रशासक के रूप में उनमें अनेक जटिल समस्याओं को सुलझाने की क्षमता थी ।

वह कांग्रेस में नहीं थे तो भी उन्हें क्रिप्स मिशन से बात चीत के दौरान दिल्ली तथा शिमला बुलाया गया था । विभाजन के पश्चात उन्हें भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया था ।

श्री शौकतुल्ला शाह अंसारी उड़ीसा के राज्यपाल रहे । वह स्वभाव के बहुत मिलनसार थे और परम्परा को निभाने वाले व्यक्ति थे ।

श्री बाकर अली मिर्जा स्वतन्त्रता सेनानी थे । उन्होंने प्रजा मंडल की स्थापना की तथा हैदराबाद राज्य के देश के साथ विलय में सहायता दी ।

श्री जी० डी० सोमानी प्रमुख उद्योग पति, लोकोपकारक एवं धार्मिक व्यक्ति थे ।

मैं अपने दल की ओर से इन सभी मित्रों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं ।

श्री समर गुह (कन्टाई) : मैं अपने दल की ओर से राजाजी तथा इस सभा के अन्य भूतपूर्व सदस्यों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और उनके संतप्त परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं ।

राजाजी का महान व्यक्तित्व था । वह एक महान विद्वान थे तथा उन्हें सच्चे भारतीय होने के नाते एक सम्राट का दर्जा प्राप्त था । वह अपने विचारों, रहन सहन और दैनिक व्यवहार से सच्चे भारतीय थे । देश के निर्माण में उनका अद्भुत योगदान था । आने वाली शताब्दियों में उन्हें याद रखा जायेगा ।

श्री कृष्ण कुमार चटर्जी का नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के फार्वर्ड ब्लाक से संबन्ध था । वह नेताजी के साथ जेल में भी रहे थे ।

श्री बाकर अली मिर्जा अत्यन्त सीधे और मिलनसार व्यक्ति थे ।

डा० अंसारी देश भक्त थे और उन्होंने विभाजन के दिनों में सांप्रदायिकता के तूफान का मुकाबिला किया था ।

मैं सभी भूतपूर्व सदस्यों के शोकसंतप्त परिवारों को संवेदना संदेश भेजने में अपने आप को आपके साथ संबद्ध करता हूं ।

Shri Jambuwant Dhote (Nagpur) : On behalf of Forward Block party I offer sympathy and condolences to the families of Shri Krishna Kumar Chatterjee, Shri C. Rajagopalachari, Dr. Shaukatullah Shah Ansari, Shri Baker Ali Mirza, Dr. G.D. Somani, Major General Himat Singh ji and Shri Mahadevappa Rampure.

श्रीमती एम० गौडफ्रे (नामनिर्देशित-आंग्ल-भारतीय) : आप सदन के नेता तथा अन्य सदस्यों द्वारा सम्मानीय राजाजी के प्रति जो भाव व्यक्त किये गये हैं, मैं उनके साथ आपने को संबद्ध करती हूं ।

में यह भी चाहूंगी कि हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलियां विगत कुछ महीनों के दौरान परलोक सिधारे अपने सहयोगियों परिवारों को भेजें और मैं विशेषरूप से यह कहना चाहूंगी कि दिवंगत आत्माओं को शांति मिले ।

श्री मोहम्मद शरीफ (पेरियाकुलम) : राजाजी का देहावसान राष्ट्र की एक महान् हानि है । वे एक सुविख्यात राजनीतिज्ञ तथा एक सच्चे गांधीवादी नेता थे ।

अस्पृश्यता को संविधान द्वारा अपराध-घोषित करने से पहले वे ही एक पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में 1937-39 के दौरान जब वे मद्रास के मुख्यमंत्री थे हरिजनों को प्रवेश करने की अनुमति देने का साहस किया था । जब वे अविभाजित मद्रास राज्य के प्रधान मंत्री रहे, उस समय उन्होंने अपने जिले के सेलम

में नशाबंदी लागू की। उस काल में जब अन्तर-जातीय विवाह को बड़े ही हीन दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने अपनी पुत्री लक्ष्मी का विवाह गांधी जी के सुपुत्र श्री देवदास गांधी के साथ किया था।

रामायण, महाभारत, उपनिषद् और गीता सरीखी उनकी अमर रचनायें भावी पीढ़ियों के लिये भेंट हैं। कट्टर हिन्दू होते हुये भी वे अल्पसंख्यकों के मित्र थे।

मैं अपने दल भारतीय संघ मुस्लिम लीग की ओर से उनके तथा अन्य दिवंगत भूतपूर्व सदस्यों के शोकाकुल परिवारों को विनम्र श्रद्धान्जलियां समर्पित करता हूं।

श्री के० हनुमन्तैया (बंगलौर) : महात्मा गांधी राष्ट्रपिता तथा स्वाधीनता के भविष्यवक्ता थे। हर भविष्यवक्ता के दूत होते हैं। गांधी जी के मेरे विचार में चार दूत थे; नेहरू, पटेल, राजेन्द्रप्रसाद और राजाजी। इन चारों ने गांधी जी को शक्ति प्रदान की और श्रद्धापूर्वक उनका अनुकरण किया।

राजाजी, गांधी जी के विचारों के सिद्धान्तकार थे। राजाजी उन लोगों में से एक थे जिन्होंने देश का सिर ऊंचा उठाया। वे विपक्ष के भी एक आदर्श प्रवक्ता थे। विरोध के स्वर को उन्होंने मधुर तर्क द्वारा मुखरित किया। जैसा कि गीता में कहा गया है उन्होंने मोह त्याग कर यह सिद्ध किया कि सही विरोधी मन कैसा होता है।

मैं इस सदन से अपील करता हूं कि उनकी स्मृति में राजधानी में एक स्मारक बनाया जाये।

श्री बनमाली पटनायक (पुरी): यहां व्यक्त किये गये भावों का समर्थन करते हुये मैं राजाजी के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं। मुझे उनसे सम्पर्क बनाने का आजादी से बहुत पहले अवसर मिला। जब वे भारत के गवर्नर जनरल थे। वह जब पुरी गये थे तो मैंने उनसे पूछा था —"आप अहिंसा के दूत है और गांधी जी के अनुयायी हैं; तो आपने गांधी जी के हत्यारों पर लगाये गये मृत्यु दण्ड की पुष्टि कैसे की ?" उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया :—"मैं इस प्रश्न की आशा रखता था। इस बारे में मैं काफी दुविधा में पड़ गया था. . . . . । मैंने गांधी जी द्वारा लिखित सामग्री श्री देवदास गांधी से मंगवायी। उस सामग्री से मुझे पता चला कि जब स्वामी श्रद्धानंद की हत्या की गयी तो हत्यारे को फांसी पर लटकाया गया परन्तु गांधी जी ने कुछ नहीं कहा। उससे मुझे मृत्यु दंड की पुष्टि करने का साहस मिला।

इनका महान मन साफ था। उनकी प्रशंसा करने के लिये मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

डा० शौकतुल्ला शाह अंसारी उड़ीसा के गवर्नर थे। मुझे उनके साथ तीन वर्ष काम करने का अवसर मिला। वे एक महान् राष्ट्रवादी थे। उन्हें इस बात का बड़ा दुख था कि भारत का विभाजन हुआ। लेकिन उन्होंने मुझे यह भी कहा कि पाकिस्तान अधिक दिन नहीं रहेगा। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने पाकिस्तान को टूटते हुये देखा।

मैं अन्य दिवंगत सदस्यों को नहीं जानता लेकिन उनके प्रति अपनी श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : सभा शोक प्रकट करने हेतु कुछ देर मौन खड़ी रहे।

तत्पश्चात सदस्यगण कुछ देर मौन खड़े रहे।

The Members then stood in silence for a short while.

इसके पश्चात लोक सभा मंगलवार, 20 फरवरी, 1973/1 फाल्गुन, 1894 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, February, 20, 1973/Phalguna 1, 1894 (Saka)

MGIPNLK—3/Lok Sabha/73—16-3-73—490 Copies.